सांध्य दैनिक
4PM
जिद...सच की
www.4pm.co.in www.facebook.com/4pmnewsnetwork @Editor_SanjayS YouTube @4pm NEWS NETWORK
● वर्ष: 12 ● अंक 221 पृष्ठ: 8 ● लखनऊ, शनिवार 19 सितम्बर, 2026
मूल्य ₹ 3/-

यदि आप दूसरों की मदद कर सकते हैं, तो अवश्य करें, यदि नहीं कर सकते हैं तो कम से कम उन्हें नुकसान नही पहुचाइए।

-दलाई लामा

भारतीय महिला टीम एशियन गेम्स के सेमीफाइनल... 7 | एकबार फिर दिखा पायलट का... 3 | हर जिले अलग-अलग घोषणापत्र... 2

घनी आबादी के बीच गंभीर सवाल खड़ा करता फहद इसलाही का अस्पताल

कोट-पैंट में यारी बेसमेंट की तैयारी फिर नियमों की क्या लाचारी ?

जहां होनी चाहिए पार्किंग वहां चल रही है नर्सिंग छात्रों की क्लास

» अस्पताल के बेसमेंट में मरीजों का इलाज, लगी आग तो क्या होगा?

» यूपी के शीर्ष नौकरशाही की फहद इसलाही के साथ बेहद निजी तस्वीरें वायरल उठे सवाल

» फायर विभाग के नियमों का पालन नहीं किया जा रहा है अस्पताल में

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। लखनऊ के चर्चित चेहरों में शुमार फहद इसलाही की सूबे के शीर्ष अधिकारियों के साथ आयी बेहद निजी तस्वीरों ने लखनऊ का तामपान बेहद खतरनाक स्तर तक बड़ा दिया है। यूपी के शीर्ष ब्यूरोक्रेट की यह तस्वीरें खुद फहद इसलाही के सोशल मीडिया से सामने आयी है। तस्वीरों के बाद पब्लिक डोमेने में पहले से मौजूद सवालों से रहस्यमयी गुबार और ज्यादा काला हो चुका है और लोग पूछ रहे हैं कि क्या रिश्तों की चमक के बीच नियमों की निगरानी खत्म हो जाती है। लोग पूछ रहे हैं कि आखिर फहद इसलाही के अस्पताल के ऊपर उठ रहे गंभीर सवाल प्रशासन को इसलिए नहीं दिख रहे क्योंकि उनके संबध यूपी के शीर्ष अधिकारियों के साथ हैं और गलबहलियां करती तस्वीरे इस बात की साफ गवाही दे रही हैं।

फहद इसलाही के लखनऊ मेट्रोसिटी अस्पताल पर आरोप है कि वहां बेसमेंट बना कर न सिर्फ मरीजों का इलाज किया जा रहा है बल्कि छात्रों की पढ़ाई भी हो रही है। यह गभीर सवाल इसलिए उठ रहे हैं कि कुछ दिनों पहले लखनऊ में इसी तरह की इमारत में आग लगी थी और 15 जिंदगियों को हाथ धोने के लिए मजबूर होना पड़ा था। हादसे के बाद पूरे शहर की इल्लीगल बेसमेंट और अवैध निर्माण पर कार्रवाई की बात सरकार की तरफ से जोरशोर से कही गयी थी। लेकिन ढाक के वही तीन पात वाली कहावत चरितार्थ है और बिना नक्शा पास कराए अस्पताल, कोचिंग संस्थान और व्यापारिक प्रतिष्ठान अधिकारियों की मिलीभगत और दोस्ती के बल पर खुलेआम चलाए जा रहे हैं। लखनऊ के गोमतीनगर में स्थित लखनऊ मेट्रोसिटी अस्पताल को लेकर उठ रहे सवाल अब सिर्फ अस्पताल की इमारत और उसकी व्यवस्थाओं तक सीमित नहीं रह गए हैं। सवाल यह भी है कि जिन व्यवस्थाओं पर नियम कायदे लागू होते हैं उन पर निगरानी और कार्रवाई की जिम्मेदारी निभाने वाले तंत्र की नजर आखिर कितनी दूर तक जाती है। हम पहले भी अस्पताल में अनियमित निर्माण और बेसमेंट से जुड़े सवालों को सामने रख चुके हैं। पार्किंग व्यवस्था को लेकर भी सवाल उठाए गए हैं। अब हमारे हाथ लगी कुछ तस्वीरें इस पूरे मामले में एक और सवाल जोड़ती हैं।

रिश्तों की चमक के बीच नियमों की निगरानी कहां है

लखनऊ के गोमतीनगर स्थित लखनऊ मेट्रोसिटी अस्पताल को लेकर उठ रहे सवालों की कड़ी में यह तस्वीरे उस ज्वालामुखी की तरफ फटी है जिसका लावा तहस नहस करने के लिए काफी है। तस्वीरों में फहद इसलाही यूपी के शीर्ष अधिकारियों के साथ नजर आ रहे हैं। खास बात यह है कि इनमें से ज्यादातर तस्वीरें किसी गुप्त कैमरे या छिपे हुए स्रोत से हासिल नहीं की गई हैं इन्हें खुद फहद इसलाही अथवा उनसे जुड़े सार्वजनिक सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर साझा किया गया है। यानी तस्वीरों की तलाश में 4PM को कोई खास मशक्कत नहीं करनी पड़ी। जो तस्वीरें सार्वजनिक की गयी वही अब सार्वजनिक सवालों का हिस्सा बन गई हैं।

टॉप ब्यूरोक्रेट के साथ फहद की तस्वीरें

इन तस्वीरों में अस्पताल से जुड़े फहद इसलाही कुछ वरिष्ठ अधिकारियों के साथ नजर आ रहे हैं। तस्वीर अपने आप में किसी अनियमितता का प्रमाण नहीं है। किसी अधिकारी के साथ खड़े होना या व्यक्तिगत परिचय होना भी अपराध नहीं है। लेकिन जब उसी संस्थान की भवन व्यवस्था बेसमेंट और पार्किंग को लेकर सवाल सार्वजनिक रूप से उठ चुके हों तब प्रभावशाली लोगों के साथ नजदीकी की तस्वीरें स्वाभाविक रूप से यह सवाल जरूर पैदा करती हैं कि क्या नियमों की निगरानी भी उतनी ही सहजता से हो रही है जितनी सहजता से तस्वीरों में मेल मुलाकात दिखाई देती है। सवाल सीधा है अगर अस्पताल का निर्माण स्वीकृत नक्शे और निर्धारित मानकों के मुताबिक है तो फिर संबंधित विभाग सामने आकर स्थिति साफ क्यों नहीं करते। बेसमेंट स्वीकृत है या नहीं? अगर स्वीकृत है तो किस नक्शे के तहत? पार्किंग के लिए स्वीकृत प्रावधान क्या हैं और मौके पर उनकी वास्तविक स्थिति क्या है? क्योंकि अस्पताल कोई सामान्य व्यावसायिक प्रतिष्ठान नहीं होता। यहां मरीज उनके परिजन और कर्मचारी रोजाना आते जाते हैं। इसलिए भवन सुरक्षा अग्नि सुरक्षा पार्किंग और आपातकालीन पहुंच जैसे सवाल कागजों की खानापूर्ति भर नहीं हो सकते।

महत्वपूर्ण सवाल तस्वीरों के साथ रिकॉर्ड का भी है

फहद इसलाही की अधिकारियों के साथ तस्वीरें अगर सामान्य सामाजिक या आधिकारिक मुलाकात हैं तो इसमें किसी को आपत्ति नहीं होनी चाहिए। लेकिन अगर अस्पताल से जुड़े निर्माण और पार्किंग के सवालों पर संबंधित विभागों ने कोई जांच की है कोई नोटिस दिया है कोई स्वीकृति जारी की है या कोई कार्रवाई की है तो वह रिकॉर्ड भी सार्वजनिक होना चाहिए। क्योंकि सवाल यह नहीं कि कौन किसके साथ फोटो में खड़ा है सवाल यह है कि किसके अस्पताल में कौन सी व्यवस्था नियमों के मुताबिक है और कौनसी नहीं। और अगर सब कुछ नियमों के मुताबिक है तो तस्वीरें बेअसर हैं लेकिन अगर नियमों पर सवाल हैं तो फिर तस्वीरें एक और सवाल जरूर पूछती है कोतवाल साहब का साथ तो फिर सैंय्या को नहीं लगता डर।

तस्वीरों के बल पर रौब झाड़ने की परम्परा

किसी अधिकारी की किसी व्यक्ति के साथ तस्वीर अगर आधिकारिक बैठक, सरकारी कार्यक्रम, सार्वजनिक समारोह या पेशेवर मुलाकात की हो तो उसका संदर्भ स्पष्ट होता है। मगर जब तस्वीरों में व्यक्तिगत मेलजोल दिखाई देती है और उसी व्यक्ति से जुड़े संस्थान की भवन व्यवस्था बेसमेंट तथा पार्किंग को लेकर गंभीर सवाल सार्वजनिक रूप से उठ चुके हों तब संबंधित अधिकारियों से पारदर्शिता की अपेक्षा स्वाभाविक है। क्या इन अधिकारियों का अस्पताल से जुड़े किसी प्रशासनिक नियामकीय या निरीक्षण संबंधी काम से कोई संबंध रहा है। क्या उन्होंने कभी अस्पताल के निर्माण स्वीकृत नक्शे पार्किंग व्यवस्था या अग्नि सुरक्षा से जुड़े मामलों में कोई भूमिका निभाई है। यदि हां तो क्या उस भूमिका का पूरा रिकॉर्ड उपलब्ध है। और यदि नहीं तो फिर अस्पताल से जुड़े सवालों पर संबंधित विभागों की कार्रवाई की स्थिति क्या है। यहां एक बात साफ होनी चाहिए। किसी अधिकारी के साथ तस्वीर खिंचवाना कोई अपराध नहीं है। किसी से सामाजिक संबंध होना भी अपने आप में अनियमितता नहीं है। मगर सार्वजनिक पद पर बैठे लोगों से यह अपेक्षा जरूर की जाती है कि उनके निजी संबंधों का इस्तेमाल सरकारी प्रक्रियाओं को प्रभावित करने के लिए न हो। इसी तरह किसी अस्पताल के संचालक की अधिकारियों के साथ तस्वीरें भी अपने आप में उसके भवन या व्यवस्थाओं की वैधता का प्रमाण नहीं बनतीं।

हर जिले अलग-अलग घोषणापत्र बनाएगी सपा

» सपा प्रमुख ने विस चुनाव-27 के लिए कमर कसी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। विधानसभा चुनाव-27 को लेकर यूपी में सपा ने कमर कसना शुरूकर दिया है। पार्टी ने प्रत्येक जिले के लिए एक अलग घोषणापत्र जारी करने का निर्णय लिया है। अखिलेश 75 जिले- 75 घोषणापत्र जारी कर स्थानीय मुद्दों पर फोकस कर रहे हैं। इससे पार्टी को स्थानीय मुद्दों के आधार पर हर वर्ग के मतदाता को लुभाने में मदद मिल सकती है।

सपा यूपी में अपने संगठन को मजबूत करने के साथ ही गैर-यादव ओबीसी और दलितों, विशेष रूप से गैर-जाटव समुदायों के बीच अपनी पैठ मजबूत करने में जुटी है। सत्तारूढ़ भाजपा का धार्मिक और भावनात्मक मुद्दों को लेकर चुनाव से माहौल बनाने का मुकाबला करने के लिए सपा इस तरह की रणनीति पर काम कर रही है। सपा के अंदरूनी सूत्रों ने बताया कि एटा से पार्टी सांसद देवेश शाक्य को अलीगढ़, हाथरस,

मैनपुरी, कानपुर नगर और कानपुर देहात जिलों की 33 विधानसभा सीटों पर पीडीए पंचायतों में भाग लेकर मतदाताओं के मूड को भांपने का काम सौंपा गया है। सांसद के अलावा शाक्य जाति के स्थानीय पार्टी चेहरे भी इन कार्यक्रमों में अपनी भागीदारी सुनिश्चित कर रहे हैं।

पीडीए पंचायत का गांवों में आयोजन

सपा सूत्रों के अनुसार पार्टी ने गांवों में जिला इकाइयों द्वारा आयोजित पीडीए पंचायतों में लोकसभा सांसदों सहित विभिन्न जातियों के अपने प्रमुख चेहरों को पूरे राज्य में तैनात किया है। पार्टी के एक वरिष्ठ नेता ने बताया कि इन पंचायतों में खासकर वंचित जातियों के राजनीतिक प्रतिनिधित्व के बारे में बात कर उन्हें आश्वासन दिया जा रहा है कि चुनाव के बाद सपा सरकार बनने पर उनकी चिंताओं का समाधान किया जाएगा।

युवाओं की अपेक्षाएं अखिलेश यादव तक पहुंचाने की पहल

विक्रमादित्य मार्ग स्थित समाजवादी पार्टी कार्यालय के पास सपा नेता मो. इखलाक की ओर से युवाओं की राय जानने के लिए एक पोस्टर लगाया गया है। पोस्टर पर लगे QR कोड को स्कैन कर युवा वर्ष 27 के लिए सरकार से अपनी अपेक्षाएं और प्राथमिकताएं बता सकते हैं। पोस्टर के मुताबिक, युवाओं से रोजगार, शिक्षा, स्वास्थ्य, खेल, सुरक्षा, महंगाई, टेक्नोलॉजी और स्टार्टअप जैसे मुद्दों पर सुझाव मांगे जा रहे हैं। पोस्टर में कहा गया है कि युवाओं से मिलने वाले सुझावों को एकत्र कर सपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव तक पहुंचाया जाएगा। सपा की ओर से 2027 विधानसभा चुनाव को ध्यान में रखते हुए युवाओं के बीच संवाद और उनकी प्राथमिकताओं को जानने की गतिविधियां पहले भी सामने आई हैं। पोस्टर लगाने वाले मो. इखलाक के मुताबिक, इसका उद्देश्य युवाओं की बात सीधे पार्टी नेतृत्व तक पहुंचाना है, ताकि उनकी बताई प्राथमिकताओं को भविष्य की नीतियों और कार्यक्रमों की दिशा तय करने में शामिल किया जा सके।

अखिलेश यादव से मिले लोकदल अध्यक्ष सुनील सिंह

लोकदल के राष्ट्रीय अध्यक्ष चौधरी सुनील सिंह ने समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव से मुलाकात की। दोनों नेताओं के बीच आगामी 27 उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव को लेकर चर्चा हुई। इससे पहले भी दोनों नेताओं की मुलाकात में किसानों, युवाओं और आम जनता से जुड़े मुद्दों पर बातचीत की जानकारी सामने आई है। मुलाकात के दौरान किसान, गरीब, महंगाई और रोजगार समेत प्रदेश की राजनीतिक परिस्थितियों पर विचार-विमर्श किया गया। चौधरी सुनील सिंह ने कहा कि किसानों और युवाओं से जुड़े मुद्दे महत्वपूर्ण हैं। वहीं, आगामी विधानसभा चुनाव को लेकर राजनीतिक संवाद आगे भी जारी रहने के संकेत दिए गए हैं। दोनों नेताओं की मुलाकात ऐसे समय हुई है, जब उत्तर प्रदेश में 2027 विधानसभा चुनाव को लेकर विभिन्न राजनीतिक दलों की गतिविधियां तेज हो रही हैं।

कांशीराम की जयंती पर बसपा नहीं करेगी शक्ति प्रदर्शन

» नहीं होगा पार्टी सुप्रीमो मायावती का भाषण

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊबहुजन समाज पार्टी के संस्थापक कांशीराम के आगामी 9 अक्तूबर को परिनिर्वाण दिवस के अवसर पर राजधानी में बसपा समर्थकों का हुजूम

तो उमड़ेगा, लेकिन उन्हें पार्टी अध्यक्ष मायावती बीते वर्ष की तरह संबोधित नहीं करेंगी। सूत्रों के मुताबिक इस बार मायावती दिल्ली स्थित प्रेरणा स्थल में कांशीराम को श्रद्धांजलि अर्पित करेंगी।

उनकी अनुपस्थिति में बसपा के बड़े प्रदेश पदाधिकारियों के नेतृत्व में राजधानी में कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा। बीते वर्ष कांशीराम के परिनिर्वाण दिवस पर बसपा सुप्रीमो ने पुरानी जेल रोड स्थित कांशीराम स्मारक स्थल पर आयोजित कार्यक्रम को संबोधित किया था जिसमें लाखों लोगों की भीड़ उमड़ी थी। विधानसभा चुनाव से करीब डेढ़ साल पहले हुए इस शक्ति प्रदर्शन से बसपा को खासा जनसमर्थन मिला था। इस बार मायावती ने कांशीराम के परिनिर्वाण दिवस पर पूरे प्रदेश से कार्यकर्ताओं व समर्थकों को राजधानी आने को कहा है। हर बार यह कार्यक्रम लखनऊ और नोएडा में होता रहा है लेकिन नोएडा में कार्यक्रम स्थल पर मरम्मत का कार्य जारी होने की वजह से दो बार से टाला जा रहा है। वहीं बसपा सुप्रीमो कई बार 9 अक्तूबर को कांशीराम स्थल पर आयोजित कार्यक्रम में हिस्सा लेती रही हैं।

दीप जलाने के पैसे से बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों को मिल सकती थी राहत : अजय राय

» पीएम मोदी के जन्मदिन पर हुए आयोजनों को लेकर प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष ने साधा निशाना

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के प्रदेश अध्यक्ष अजय राय ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जन्मदिन पर हुए आयोजनों को लेकर भाजपा पर तंज कसा है। उन्होंने प्रदेश भर में लाखों दीप जलाए जाने का जिक्र करते हुए अजय राय ने कहा कि यदि इतना पैसा बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में लगाया जाता तो वहां की जनता को इसका लाभ मिलता। उन्होंने आरोप लगाया कि प्रधानमंत्री का जन्मदिन मनाने के लिए करोड़ों रुपये खर्च किए गए।

वहीं, मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की ओर से प्रधानमंत्री के जन्मदिन के अवसर पर लोगों को रोजगार दिए जाने के कार्यक्रम को लेकर भी अजय राय ने टिप्पणी की। उन्होंने कहा कि रोजगार दिए जाने की बात वह लंबे समय से सुनते आ रहे हैं और अब देखना होगा कि वास्तव में कितने लोगों को रोजगार मिलता है। कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष ने सरकार से रोजगार और बाढ़ प्रभावित लोगों के मुद्दे पर सवाल उठाए।

सदस्यता ग्रहण समारोह को सम्बोधित करते हुए प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष ने कहा कि आज देश और प्रदेश में भाजपा की जनविरोधी नीतियों से हर वर्ग परेशान है। उन्होने कहा कि योगी सरकार जनविरोधी सरकार है इनका जन सरोकारों से कोई मतलब नहीं है। कानून व्यवस्था पूरी तरह ध्वस्त हो चुकी है। उन्होने कहा कि यह जो कांग्रेस का कारवां तेजी के साथ आगे बढ़ रहा है उससे निश्चित तौर पर आगामी 027 में भाजपा सरकार को उखाड़ फेंकेगे।

दर्जनों लोगों ने अपने समर्थकों के साथ कांग्रेस पार्टी की सदस्यता ग्रहण की

कांग्रेस पार्टी की नीतियों में आस्था एवं कांग्रेस के शीर्ष नेतृत्व मल्लिकार्जुन खड़गे , श्रीमती सोनिया गांधी, राहुल गांधी , श्रीमती प्रियंका गांधी जी के प्रति विश्वास व्यक्त करते हुए उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी मुख्यालय में कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष अजय राय जी पूर्व मंत्री के समक्ष विभिन्न जनपदों के दर्जनों लोगों ने अपने समर्थकों के साथ कांग्रेस पार्टी की सदस्यता ग्रहण की। यूपी कांग्रेस कमेटी के ज्वाइनिंग प्रभारी श्री नितिन शर्मा ने सदस्यता ग्रहण करने वालों को विधिवत कांग्रेस पार्टी की प्राथमिक सदस्यता दिलायी। कांग्रेस की सदस्यता ग्रहण करने वालों में मुख्य रूप से जनपद हरदोई के गुड्डू, भदोही के शमसुददुआ, बहराइच के शेरे रजा एवं इमरान, बरेली के शोएब रजा, युसुफ, जालौन के शावान, नईम एडवोकेट, तौसीफ खां ने अपने समर्थकों सहित कांग्रेस पार्टी की सदस्यता ग्रहण की।

रामदेव मिलावट करने वालों के सरगना : बृजभूषण

» मानहानि के दावे पर पर बरसे भाजपा नेता व पूर्व सांसद

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

अयोध्या। अयोध्या पहुंचे भाजपा नेता बृजभूषण शरण सिंह ने योग गुरु रामदेव पर बयान दिया है। उन्होंने कहा कि यह मामला 22 का है। एक धार्मिक कार्यक्रम में लोगों को समझाते हुए मैंने कहा था कि गाय पालें, अपनी सब्जियां उगाएं, अपना दूध और घी बनाएं। वरना, रामदेव का घी खाकर आपके बच्चे सेहतमंद नहीं बनेंगे।

उन्होंने बताया कि अगले दिन बालकृष्ण ने मुझे फ़ोन किया। मैंने उनसे पूछा कि अगर 30 किलो गाय के दूध से एक किलो घी बनता है और दूध की कीमत 300 रुपये प्रति किलो है, तो लागत 900 रुपये आती है। तो जिस चीज को बनाने में 900 रुपये का खर्च आता है, उसे 500 रुपये में कैसे बेचा जा सकता है? मुझे इसका कोई जवाब नहीं मिला। बृजभूषण शरण सिंह ने आगे कहा कि मानहानि के दावे की बात करें तो यह भी एक तरह से अच्छी पब्लिसिटी ही है। आज मिलावटी घी, तेल और खाने-पीने की चीज़ें बिक रही हैं। मैं यह तो नहीं कहूंगा कि इसके लिए सिर्फ़ रामदेव जिम्मेदार हैं, लेकिन वे मिलावट करने वालों के सरगना जरूर हैं। देर-सवेर सरकार को मिलावट के खिलाफ अभियान चलाना ही पड़ेगा। क्योंकि, बीमारियां और कैंसर बढ़ रहे हैं। खाने-पीने की चीज़ों पर अब भरोसा नहीं किया जा सकता।

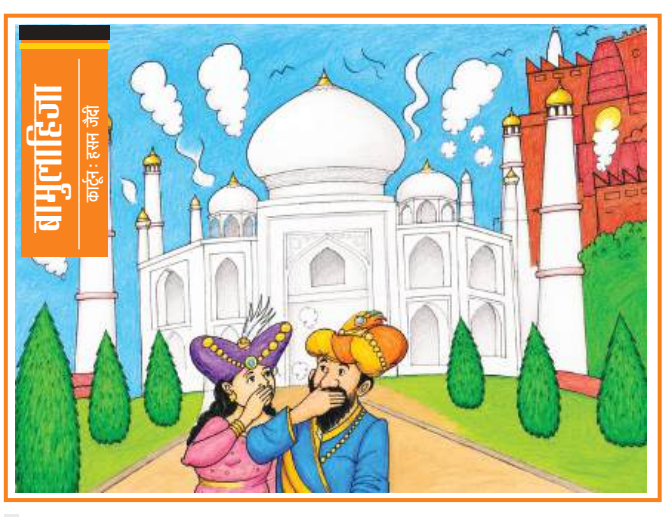

रालोद में आधी आबादी को पूरा हक़ : अनुपम मिश्र

» सामाजिक कार्यकर्ता रमा सोती हजारों समर्थकों के साथ पार्टी में शामिल

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। राष्ट्रीय लोकदल द्वारा शुक्र वार को बौद्ध शोध संस्थान सभागार, विपिन खंड, गोमती नगर, लखनऊ में भव्य सदस्यता ग्रहण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि राष्ट्रीय लोकदल उत्तर प्रदेश के कार्यकारी प्रदेश अध्यक्ष माननीय अनुपम मिश्रा रहे।

कार्यक्रम में सामाजिक कार्यकर्ता रमा सोती

ने अपने हजारों समर्थकों के साथ राष्ट्रीय लोकदल की सदस्यता ग्रहण की। कार्यक्रम का संचालन राष्ट्रीय लोकदल के प्रदेश मीडिया प्रभारी मयंक त्रिवेदी ने किया। कार्यक्रम का शुभारंभ भारत रत्न चौधरी चरण सिंह एवं पूर्व केंद्रीय मंत्री तथा राष्ट्रीय लोकदल के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष स्वर्गीय चौधरी अजीत सिंह जी के चित्र पर माल्यार्पण से हुआ। इसके पश्चात अतिथियों द्वारा दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का विधिवत शुभारंभ किया गया। मुख्य अतिथि अनुपम मिश्रा ने अपने संबोधन में कहा कि राष्ट्रीय लोकदल किसान, मजदूर, युवा, महिला तथा समाज के विभिन्न वर्गों की भागीदारी को महत्व देता है। राष्ट्रीय अध्यक्ष चौधरी जयंत सिंह जी के दूरदर्शी एवं प्रभावी नेतृत्व में राष्ट्रीय लोकदल विगत वर्षों में निरंतर अपने जनाधार का विस्तार कर रहा है। पार्टी ने अपनी विचारधारा और मूल्यों को मजबूती से आगे बढ़ाने के साथ ही समाज के हर वर्ग के बीच अपनी विश्वसनीयता, स्वीकार्यता और मजबूत जनसंपर्क को कायम रखा है।

एकबार फिर दिखा पायलट का जलवा

जो भूपेश बघेल नहीं कर पाए वो सचिन ने कर दिखाया

- राजस्थान से पंजाब तक दिखाया दम
- एक मंच पर दिखे चन्नी-राजा वडिंग समेत दिग्गज
- अपने गृहराज्य में हुए निकाय चुनाव में कांग्रेस को दिलाई बढ़त

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

चंडीगढ़। पंजाब कांग्रेस में मची रार कुछ थमती नज र आ रह है। जो नेता एक दूसरे पर हमले कर रहे थे वो अब एक साथ नजर आ रहे हैं। इस एकजुटता में ऐसी चर्चा चल रही है राजस्थान के दिग्गज नेता सचिन पायलट का हाथ हैं। देखा जाए तो राजस्थान में भी वहां पूर्व डिप्टी सीएम का जलवा बढ़ गया है।

उसका सबसे बड़ा कारण राज्य के निकाय चुनाव में कांग्रेस की अच्छी खासी बढ़त है। उसकी बढ़त ने भाजपा की नीदं की उड़ाई है। उधर चंडीगढ़ में पंजाब कांग्रेस के नए प्रभारी सचिन पायलट के नेतृत्व में हुए विरोध प्रदर्शन में पार्टी की एकजुटता देखने को मिली। लंबे समय बाद पूर्व मुख्यमंत्री चरणजीत सिंह चन्नी और प्रदेश अध्यक्ष राजा वडिंग एक ही मंच पर साथ दिखे। वहीं, विपक्ष के नेता प्रताप सिंह बाजवा ने कहा कि कांग्रेस बिना किसी एक चेहरे के मिलकर चुनाव लड़ेगी।

कांग्रेस विरोध प्रदर्शन में पायलट शामिल

चंडीगढ़ के सेक्टर 15 में पंजाब कांग्रेस भवन के बाहर कांग्रेस विरोध प्रदर्शन कर रही है। पंजाब कांग्रेस के नए प्रभारी और राजस्थान के पूर्व डिप्टी सीएम सचिन पायलट भी वहां पहुंच गए हैं। तीन महीने बाद, पूर्व सीएम और जालंधर के सांसद चरणजीत चन्नी और राज्य कांग्रेस अध्यक्ष अमरिंदर सिंह राजा वडिंग एक ही मंच पर साथ दिखे। खास बात यह है कि दोनों नेता बहुत गर्मजोशी से बातचीत करते हुए भी दिखे; उनके बीच की अच्छी केमिस्ट्री ने सबका ध्यान खींचा। इससे पहले, चन्नी और सुखजिंदर सिंह रंधावा ने पंजाब कांग्रेस के पूर्व प्रभारी भूपेश बघेल से साफ कह दिया था कि वे पार्टी के किसी भी कार्यक्रम में राजा वडिंग के साथ मंच साझा नहीं करेंगे। वही कांग्रेस के इस विरोध प्रदर्शन को देखते हुए, चंडीगढ़ ट्रैफिक पुलिस ने एक एडवाइजरी जारी की है। सुबह 11:30 बजे से सेक्टर 15/16 लाइट पॉइंट औ सेक्टर 16 राउंडअबाउट के बीच के रास्ते पर, साथ ही सेक्टर 16 राउंडअबाउट से राउंडअबाउट तक मध्य मार्ग पर ट्रैफिक प्रभावित रहेगा। लोगों से वैकल्पिक रास्तों का इस्तेमाल करने की अपील की गई है।

नाराज नेता एक साथ आए

हालाँकि, अब ये सभी नेता सचिन पायलट के नेतृत्व में हो रहे इस विरोध प्रदर्शन में एक साथ खड़े दिखाई दे रहे हैं। चरणजीत सिंह चन्नी सचिन पायलट के दाईं ओर बैठे हैं और उनके बाईं ओर राजा वडिंग बैठे हैं। इस दौरान चन्नी और राजा वडिंग को बातचीत करते हुए देखा गया। जैसे ही मंच से चन्नी का नाम घोषित किया गया, पार्टी कार्यकर्ताओं ने नारे लगाना शुरू कर दिया। हालाँकि, चन्नी ने अपने भाषण के दौरान एक बार भी राजा वडिंग का नाम नहीं लिया।

पायलट ने बदलाव की संभावना से इनकार नहीं किया

कांग्रेस हाईकमान ने छत्तीसगढ़ के पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल की जगह सचिन पायलट को पंजाब कांग्रेस का प्रभारी नियुक्त किया है। पंजाब का दौरा शुरू करने से पहले ही, पायलट ने कांग्रेस में और संगठनात्मक बदलावों की संभावना से इनकार नहीं किया। पायलट ने कहा कि पार्टी का अभी पूरा ध्यान पंजाब में बहुमत के साथ सरकार बनाने पर है। उन्होंने संगठनात्मक जिम्मेदारियों में बदलाव को एक सामान्य प्रक्रिया बताया इस टिप्पणी ने निश्चित रूप से वारिंग को लेकर अटकलों को हवा दी है।

कांग्रेस के सभी सदस्य एक मंच पर एकजुट हुए हैं - बाजवा

इस बीच, विपक्ष के नेता प्रताप सिंह बाजवा ने कहा देखिए, कांग्रेस के सभी कार्यकर्ता एक ही मंच पर जमा हुए हैं। उन्होंने कहा कि वे किसी खास चेहरे को आगे किए बिना चुनाव लड़ेंगे; इसके बजाय, वे राहुल गांधी, प्रियंका गांधी, मल्लिकार्जुन खड़गे और सचिन पायलट के नाम पर वोट मांगेंगे। बहुमत मिलने के बाद हाई कमान फैसला करेगा। जब पिता जीवित हों, तो बेटों का कोई दावा नहीं बनता। इससे पहले, जैसे ही राजा वडिंग ने माइक संभाला, NSUI कार्यकर्ताओं ने अपने झंडे लहराए। राजा वडिंग उन्हें बार-बार बैठने के लिए कहते रहे, लेकिन वे झंडे लहराते रहे। राजा वडिंग ने सबसे पहले सचिन पायलट का नाम लिया, उसके बाद बाजवा का। फिर उन्होंने चन्नी का नाम लिया और उसके बाद सुखजिंदर रंधावा का।

बसपा में उठापटक, मायावती को चुनौती

- बसपा सिर्फ परिवार के अंदर ही तलाशेगी उत्तराधिकारी
- भतीजे आकाश के बाद चर्चा में भतीजी दीपिका आनंद का नाम

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। यूपी में इस समय जहां सपा, भाजपा, कांग्रस आने वाले विस चुनाव की तैयारी में जुठी हैं तो वहीं बसपा में परिवार में ही उठापटक जारी है। बसपा सुप्रीमो और उत्तर प्रदेश की पूर्व मुख्यमंत्री मायावती उत्तराधिकारी को लेकर असमंजस में है। कभी भतीजे आकाश को तो कभी छोटे भतीजे को बड़ी जिम्मेदारी देती है फिर उन्हे हटा कर अब भतीजी को आगे बढ़ाने की सोच रही है।

उनके सामने सबसे बड़ी चुनौती यह है कि वह अपनी बहुजन समाज पार्टी का अगला उत्तराधिकारी किसे बनाती हैं। ऐसे में आकाश आनंद से खटपट के बाद पार्टी में उनकी भतीजी दीपिका का नाम सामने आ रहा है।

सबसे बड़ी चुनौती उत्तराधिकारी चुनना

कांशीराम की कसौटी

मायावती के लिए शायद यह सही वक्त है कि वह उत्तराधिकारी चुनने की पूरी प्रक्रिया को परिवार से बाहर भी देखें। कांशीराम ने मायावती की नेतृत्व क्षमता देखकर उन्हें आगे बढ़ाया था। मायावती भी अगर अपने आसपास किसी ऐसे कार्यकर्ता को देखती हैं, तो उसे आगे बढ़ाने में हिचक क्यों? यह इसलिए भी अहम है क्योंकि बसपा को कांशीराम ने सामाजिक आंदोलन से राजनीतिक ताकत में बदला और मायावती ने इसे यूपी की सत्ता तक पहुंचाया। ऐसे में अगर अगली पीढ़ी का नेतृत्व तय करने में परिवार ही सबसे अहम कसौटी बन जाए तो यह कांशीराम की बनाई राजनीतिक संस्कृति से अलग रास्ता होगा। परिवार से कोई योग्य नेता हो सकता है, लेकिन सिर्फ परिवार में होना ही योग्यता का विकल्प नहीं हो सकता। अगर मायावती को परिवार से बाहर ऐसा कोई कार्यकर्ता दिखाई ही नहीं देता, जिसे वह भविष्य में पार्टी की कमान सौंप सकें तो यह उससे भी ज्यादा गंभीर सवाल है। इतने लंबे वक्त में अगर पार्टी में दूसरी कतार का नेतृत्व तैयार नहीं हो पाया तो इसका मतलब है कि समस्या सिर्फ उत्तराधिकारी की नहीं है। संगठन के भीतर नेतृत्व तैयार करने की प्रक्रिया पर भी गंभीर सवाल उठता है।

बसपा को अगले चुनाव में मजबूत करने की चुनौती

मायावती के सामने इस वक्त सिर्फ बसपा को अगले चुनाव में मजबूत करने की चुनौती ही नहीं है, उनके सामने यह भी तय करने का मौका है कि उनकी राजनीतिक विरासत आगे कैसे चलेगी। कांशीराम के बाद उन्होंने अपने दम पर पार्टी को खड़ा किया और यूपी की राजनीति में मजबूत ताकत बनी। लेकिन, अब बड़ा सवाल है कि उनके बाद बसपा की कमान कौन संभालेगा और क्या वह व्यक्ति परिवार से ही होगा? जिस तरह उत्तराधिकारी को लेकर मायावती खुद कंफ्यूजन में दिख रही हैं, उससे पार्टी के कार्यकर्ताओं और समर्थकों के बीच भी दुविधा पैदा हो रही है। वह कभी अपने भतीजे आकाश आनंद को आगे बढ़ाती हैं और फिर कुछ समय बाद उनसे दूरी बना लेती हैं। आकाश को अब पार्टी से अलग किया जा चुका है। मायावती ने अपनी भतीजी दीपिका आनंद का नाम आगे किया है। सवाल है कि क्या बसपा का भविष्य सिर्फ परिवार के भीतर ही तलाशा जाएगा? मायावती परिवारवाद से दूरी की बात जरूर करती हैं, लेकिन उत्तराधिकारी वह परिवार में ही ढूंढती दिखती हैं।

कमजोर होता जा रहा आधार

बसपा के लिए यह सवाल इसलिए भी अहम है क्योंकि उसका पारंपरिक राजनीतिक आधार पहले से काफी कमजोर हुआ है। 22 के यूपी विधानसभा चुनाव में पार्टी को 12.88 प्रतिशत वोट मिले और सीट सिर्फ एक। 24 के लोकसभा चुनाव में पार्टी का वोट शेयर और घटकर करीब 9 प्रतिशत रह गया। सीट वह एक भी नहीं जीत सकी। यूपी में दलित आबादी करीब 21 प्रतिशत है। इसमें जाटव समुदाय की हिस्सेदारी आधे से ज्यादा है। जाटव समाज लंबे समय तक बसपा का सबसे मजबूत आधार रहा है। मायावती खुद भी जाटव समुदाय से आती हैं। लेकिन, अब सवाल यह है कि क्या यह वोट बैंक पहले की तरह ही बसपा के साथ रहेगा? चंद्रशेखर आजाद का उभार भी इसमें अहम भूमिका निभा सकता है। वह भी जाटव समुदाय से आते हैं और खास तौर पर युवाओं के बीच उनकी राजनीतिक मौजूदगी बढ़ी है। 2024 में नगीना लोकसभा सीट से उनकी जीत ने दिखाया कि बसपा के पारंपरिक सामाजिक आधार में किसी दूसरे दल के लिए राजनीतिक जगह बन सकती है।

जिद... सच की

Sanjay Sharma
editor.sanjaysharma
@Editor_SanjayS

लोकतंत्र में असहमति व संवाद दोनों बहुत जरूरी

लोकतंत्र केवल मतपत्र पर लगाई गई मुहर का नाम नहीं है। यह उस विश्वास का नाम है जिसमें प्रत्येक नागरिक को अपनी आवाज, अपनी गरिमा और अपने अधिकारों के साथ राष्ट्र-निर्माण में सहभागी होने का अवसर मिलता है। हर वर्ष 15 सितंबर को मनाया जाने वाला अंतर्राष्ट्रीय लोकतंत्र दिवस इसी लोकतांत्रिक चेतना को मजबूत करने का अवसर है।

किसी भी अच्छे लोकतंत्र में असहमति व संवाद दोनों बहुत जरूरी होते हैं। कभी सरकारों के कुछ निणर्य कई लोगों को पंसद नहीं आते तो उसके खिलाफ विरोध के स्वर उठते हैं। पर इस विरोध को मतलब देश का विरोध नहीं है। सरकारों को समझना उनके निणर्य को न मानने वाला उतना ही बड़ा देश भक्त होता जितना कोई सरकार के पक्ष वाला। लोकतंत्र केवल मतपत्र पर लगाई गई मुहर का नाम नहीं है। यह उस विश्वास का नाम है जिसमें प्रत्येक नागरिक को अपनी आवाज, अपनी गरिमा और अपने अधिकारों के साथ राष्ट्र-निर्माण में सहभागी होने का अवसर मिलता है। हर वर्ष 15 सितंबर को मनाया जाने वाला अंतर्राष्ट्रीय लोकतंत्र दिवस इसी लोकतांत्रिक चेतना को मजबूत करने का अवसर है। संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 2007 में इस दिवस की स्थापना की थी और 2008 से इसका आयोजन हो रहा है।

26 में अंतर-संसदीय संघ-आईपीयू ने लोकतंत्र दिवस के लिए मानवाधिकारों को केंद्र में लाएं को प्रमुख विषय बनाया है। एक तरह से शांति, स्वतंत्रता, समानता एवं सह-जीवन का बुनियादी स्तंभ है लोकतंत्र। इसका संदेश स्पष्ट है कि मानवाधिकार लोकतंत्र के सजावटी तत्व नहीं, बल्कि उसकी बुनियादी शर्त हैं। मानवाधिकार सुरक्षित नहीं हैं तो चुनाव, संसद और संविधान की मौजूदगी के बावजूद लोकतंत्र अधूरा रहेगा। आज दुनिया के सामने लोकतंत्र का सबसे बड़ा प्रश्न यही है कि क्या लोकतंत्र केवल संस्थागत ढांचे के रूप में जीवित है या उसके भीतर नागरिक स्वतंत्रता, समानता, न्याय, संवाद और मानवीय गरिमा भी सुरक्षित हैं? संयुक्त राष्ट्र भी 26 में लोकतंत्र को केवल चुनावों तक सीमित न मानते हुए मानवाधिकार, कानून के शासन और नागरिकों की सार्थक भागीदारी को उसकी अनिवार्य आत्मा मान रहा है। लोकतंत्र की खूबसूरती यह है कि सत्ता का अंतिम स्रोत जनता होती है। लेकिन इसकी कमजोरी भी यहीं से शुरू होती है। जब जनता अपनी जिम्मेदारी भूल जाती है, जब नागरिक अपने अधिकारों के प्रति तो जागरूक रहते हैं लेकिन कर्तव्यों के प्रति उदासीन हो जाते हैं, जब चुनाव जाति, धर्म, क्षेत्र, धनबल, बाहुबल या झूठे प्रचार के प्रभाव में आने लगते हैं, तब लोकतंत्र का बाहरी ढांचा तो बचा रहता है, लेकिन उसकी आत्मा कमजोर होने लगती है।

(इस लेख पर आप अपनी राय 9559286005 पर एसएमएस या info@4pm.co.in पर ई-मेल भी कर सकते हैं)

मानवता पर मंडराता छिपी भूख का संकट

मुकुल व्यास

भरपेट भोजन के बाद हम तृप्त हो जाते हैं, लेकिन एक बड़ा सवाल यह है कि क्या हमारी थाली में पौष्टिक तत्व समुचित मात्रा में मौजूद हैं? दुनिया में आबादी का बहुत बड़ा हिस्सा महत्वपूर्ण विटामिन और खनिज पदार्थों से वंचित है। हैरानी की बात यह है कि यह समस्या उन वजहों से बढ़ रही है जिनका लोगों की खाने-पीने की पसंद से कोई लेना-देना नहीं है। इसका जवाब उन फसलों में छिपा है जिन पर लगातार गर्म माहौल का असर पड़ रहा है। दुनिया की आधी से ज्यादा आबादी में विटामिन बी2, बी9, सी और ई के साथ-साथ कैल्शियम, आयरन और आयोडीन जैसे खनिजों की कमी पाई गई है। यह कमी सिर्फ गरीब देशों तक ही सीमित नहीं है, बल्कि अमीर देशों में भी देखी जा सकती है। आहार विज्ञानी इसे 'छिपी हुई भूख' कहते हैं और यह कैलोरी की कमी से नहीं, बल्कि विटामिन और खनिजों की कमी से उपजती है। दुनिया की मुख्य फसलों में पके हुए सफेद चावल से सबसे कम पोषक तत्व मिलते हैं। पौष्टिकता के मामले में यह मक्का और गेहूं दोनों से काफी पीछे है।

यह एक गंभीर समस्या है, क्योंकि अरबों लोगों के लिए रोजाना मिलने वाली कैलोरी का सबसे बड़ा स्रोत चावल ही है। एशिया के ज्यादातर हिस्सों में चावल की तीन पूरी थालियां खाने वाले व्यक्ति को जरूरी विटामिन और खनिज की सही मात्रा नहीं मिल पाती। चावल पेट तो भर देता है, लेकिन पोषण की ऐसी कमी छोड़ जाता है जिसे सामान्य मात्रा में खाने से पूरा नहीं किया जा सकता। जलवायु परिवर्तन अब इस बुरी स्थिति को और भी बदतर कर रहा है। जैसे-जैसे हवा में कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा बढ़ रही है, अनाज में जमा होने वाले प्रोटीन, बी ग्रुप के विटामिन और खनिजों की मात्रा कम होती जा रही है। एक अनुमान है कि चावल की गुणवत्ता में आ रही इस गिरावट के कारण 2050 तक 23.9 करोड़ लोग फोलेट की कमी का शिकार हो सकते हैं। वे उन 2.5 अरब लोगों में शामिल हो जाएंगे जिन्हें पहले से ही पर्याप्त फोलेट नहीं मिल रहा है। ध्यान रहे कि फोलेट एक ऐसा बी-विटामिन है जिसके बिना शरीर का काम नहीं चल सकता।

एक नए अध्ययन में जर्मनी के लीबनज इंस्टीट्यूट ऑफ प्लांट बायोकेमिस्ट्री के शोधकर्ताओं ने पौधों को जीवित रखने वाली चीजों और लोगों को स्वस्थ रखने वाली चीजों के बीच एक हैरान करने वाली समानता पाई है। जिन विटामिनों पर हमारा शरीर निर्भर करता है, वही विटामिन मुश्किल हालात में जीवित रहने के लिए पौधों के भी काम आते हैं। विटामिन बी1 से

उपचारित फसलें उन फसलों के मुकाबले सूखे का बेहतर सामना करती हैं जिनमें यह नहीं होता। फोलिक एसिड और राइबोफ्लेविन पौधों को सूखे और खारी मिट्टी जैसी मुश्किल स्थितियों से निपटने में मदद करते हैं। ज्यादा पोषण वाली फसलें खराब मौसम का भी बेहतर ढंग से सामना कर सकती हैं। जलवायु परिवर्तन खाद्य आपूर्ति पर दोहरी मार करता है। यह उन फसलों से पोषक तत्व छीन लेता है जो खेतों में उगती हैं और ठीक उसी समय उन खेतों पर सूखा, गर्मी और बाढ़ का कहर भी बरपाता है। पिछली सदी में पौधों के प्रजनकों ने बाकी चीजों के मुकाबले अधिक पैदावार पर ही सबसे ज्यादा ध्यान दिया। 1960 के दशक की हरित क्रांति ने ठीक यही किया, जिससे पूरे एशिया में गेहूं, चावल और मक्के की पैदावार दोगुनी हो गई। पैदावार बढ़ने से एक अरब से ज्यादा लोगों को भुखमरी से बचाने में मदद मिली। फिर भी, मात्रा पर अधिक जोर दिए जाने से किसानों द्वारा उगाई जाने वाली फसलों का पोषण मूल्य कम हो गया। पारंपरिक क्रॉस-ब्रीडिंग से कुछ पोषक तत्वों की मात्रा थोड़ी बढ़ाई जा सकती है, जैसा कि बीन्स और गेहूं की फसलों में आयरन और जिंक के मामले में हुआ है। लेकिन यह ऐसा विटामिन नहीं जोड़ सकती जिसे बनाने की क्षमता पौधे के जीन्स में कभी थी ही नहीं। यह तरीका इतना धीमा है कि निराशा होती है। एक बेहतर किस्म को किसान के खेत तक पहुंचने में 8 से 15 साल तक लग सकते हैं। आनुवंशिक इंजीनियरिंग के नए टूल एक साथ कई पुरानी बाधाओं को तोड़ते हैं। वे क्रॉस-ब्रीडिंग की तुलना में बहुत तेजी से काम करते हैं और उनमें ऐसी सटीकता होती है जो क्रॉस-ब्रीडिंग में कभी नहीं मिल सकती।

आनुवंशिक इंजीनियरिंग का सबसे मशहूर उत्पाद 'गोल्डन राइस' है, जिसके दानों का रंग हल्का सुनहरा होता है क्योंकि उनमें प्रो-विटामिन ए होता है। इस फसल को एशिया के कुछ हिस्सों में विटामिन ए की कमी से बच्चों में होने वाले अंधेपन से लड़ने के लिए विकसित किया गया था। पौधों की पौष्टिकता बढ़ाने में क्रिस्पर जीन संपादन तकनीक उपयोगी हो सकती है। क्रिस्पर आधारित चावल की एक किस्म के दानों में पहले से ही अधिक आयरन और जिंक होता है। इस तरह से बनाई गई नई किस्म सिर्फ 2 से 6 साल में तैयार हो सकती है।

ब्रिक्स ने कर दी ग्लोबल साउथ की मजबूत दावेदारी

भाषा सिंह

भारत की अध्यक्षता में हुए ब्रिक्स शिखर सम्मेलन में ग्लोबल साउथ ने विश्व राजनीति में अपनी मजबूत दावेदारी पेश की है। दुनिया के 40 फीसदी से अधिक सकल घरेलू उत्पाद के मजबूत आधार वाले ब्रिक्स के 11 देशों ने सम्मेलन में आर्थिक-सामाजिक-राजनीतिक मुद्दों के साथ युद्ध, युद्ध जैसी स्थिति, टैरिफ वॉर, प्रतिबंधों जैसी चुनौतियों पर बेहतर समझदारी विकसित की। बुनियादी तौर पर सहमति बनी कि ब्रिक्स देशों को एक-दूसरे पर आने वाले संकटों में साथ देना चाहिए। दिल्ली में 12-13 सितंबर को हुए इस शिखर सम्मेलन में ईरान के राष्ट्रपति मसूद पेजेशकियान ने बड़ी कूटनीतिक जीत हासिल की। छह महीने अमेरिका से जंग लड़ने के बाद भी उनके हौसले बुलंद हैं और वह मजबूती से ट्रंप राज के खिलाफ ताल ठोंकते नजर आए। भारत ने बतौर मेजबान कई देशों के साथ द्विपक्षीय मुलाकातों का भी आयोजन किया, जिसमें ईरान और संयुक्त अरब अमीरात के बीच मुलाकात बहुत अहम रही।

ब्रिक्स 2026 का घोषणापत्र मौजूदा दौर में अंतर्राष्ट्रीय स्थितियों के मद्देनजर युद्ध के खिलाफ है और कहता है कि संघर्ष व जंग से नहीं, बल्कि बातचीत—आपसी सलाह से मसले हल किए जाने चाहिए। आतंकवाद की भर्त्सना के साथ-साथ तनाव और युद्ध जैसी स्थितियों से बचने का प्रस्ताव लिया गया। टैरिफ वॉर से दुनिया पिछले एक साल से जूझ रही है। ब्रिक्स के देश खासतौर पर अमेरिका के टैरिफ वॉर के निशाने पर रहे हैं चाहे चीन हो या भारत या फिर रूस और सभी के लिए इस टैरिफ के डंडे से बाहर निकलने का रास्ता खोजना प्राथमिकता थी। इस तरह 11-12-13 को ब्रिक्स के अलग-अलग प्लेटफॉर्म पर खूब चर्चा हुई। हालांकि घोषणापत्र में सीधे-सीधे अमेरिका का नाम नहीं है, लेकिन उसकी नीतियों के खिलाफ कई स्टेटमेंट हैं। मिसाल के तौर पर ईरान, रूस और चीन ने ब्रिक्स देशों के भीतर व्यापार कैसे स्थानीय मुद्रा में किया जा सकता है, इस पर सघन चर्चा की है। घोषणापत्र के निशाने पर इस्राइल है और खुलकर गाजा में हो रही हिंसा-बर्बरता के खिलाफ बोला गया है जो अपने आप में ऐतिहासिक है।

घोषणापत्र में कहा गया है कि ब्रिक्स के देश तमाम पक्षों से यह आग्रह करते हैं कि वे गाजा में युद्धविराम का सम्मान करें। ब्रिक्स फलस्तीनियों को जबरन बाहर धकेलने के खिलाफ है और दो राष्ट्रों के निर्माण की अवधारणा के समर्थन में है। इस तरह से ब्रिक्स के तमाम देशों का फलस्तीन के पक्ष में आना और इस्राइल के खिलाफ बोलना एक मायने में अमेरिका के स्टैंड के खिलाफ बोलना है। सारी दुनिया जानती है कि इस्राइल के फलस्तीन में हमले के पीछे अमेरिका है। ब्रिक्स 2026 का घोषणापत्र इस लिहाज से ट्रंप के खिलाफ है, क्योंकि इसके निशाने पर इस्राइल है और ईरान पर मंडरा रहे अमेरिकी युद्ध की लालसा है। अमेरिका का नाम लिए बिना पश्चिमी एशिया में चल रहे तनाव का जिक्र है और पश्चिमी एशिया में लगातार बढ़ते तनाव पर गहरी चिंता जताई गई है और कहा गया है कि ऐसे मामलों में तनाव कम करने के कदम उठाने चाहिए। अमेरिका के टैरिफ यानी तटकर के डंडे से ब्रिक्स के सभी देश परेशान नजर आए। चीन, रूस, ईरान, ब्राजील समेत इंडोनेशिया ने भी एकतरफा-मनमाने, तंग करने की नीयत से लगाए जाने वाले टैरिफ का विरोध किया।

भारत ने भी कहा कि इससे विश्व व्यापार प्रभावित होता है और सप्लाई चेन बाधित होती है। ब्रिक्स के 18वें सम्मेलन ने विश्व व्यापार संगठन के बहुपक्षीय व्यापार सिस्टम का समर्थन किया। इसमें तमाम देशों की साझेदारी संभव है। ये तमाम बातें निश्चित तौर पर अमेरिकी राष्ट्रपति को अखरेंगी, क्योंकि हर मोर्चे पर उनके एजेंडे को चुनौती दी जा रही है। दुनिया को यूनिपोलर यानी एकध्रुवीय बनाने के ट्रंप के सपने को इस सम्मेलन में कड़ी चुनौती मिली है। इसमें बड़ा गेम चेंजर साबित हुआ ईरान और उसका कूटनीतिक दांव। जिस तरह से ईरान के राष्ट्रपति मसूद पेजेशकियान ने दिल्ली ब्रिक्स सम्मेलन में अपने एजेंडे को आगे रखा और अमेरिका के खिलाफ चल रहे अपने छह महीने के संघर्ष को खुलकर रखा और यह ऐलान किया कि ईरान को गुलाम बनाना असंभव है। उनकी बातों ने माहौल बना दिया। अमेरिका ने जैसे ईरान के परमाणु संयंत्रों पर हमला किया, उसके सिविल इंफ्रास्ट्रक्चर को ध्वस्त किया—उसे भी राष्ट्रपति मसूद ने एक मुद्दा बनाया और कहा कि दरअसल ब्रिक्स के देशों को इनके खिलाफ बोलना चाहिए, क्योंकि ये अंतर्राष्ट्रीय शांति व सुरक्षा के लिए खतरा है।

मसूद ने साथ में फलस्तीनियों के आत्मनिर्णय के अधिकार के समर्थन में अहम बिंदु रखा कि इसके पक्ष में बात करके ही दरअसल ग्लोबल गवर्नेंस की साख की परीक्षा हो सकती है। उधर, रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने यूरोप व अमेरिका के खिलाफ जमकर बैटिंग की। पुतिन ने यह कहकर सनसनी मचा दी कि रूस सबका दोस्त है और वे यूरोप को सस्ते में तेल बेच रहे थे—150 डॉलर प्रति 1,000 क्यूबिक मीटर और अब वे 1,000 डॉलर दे रहे हैं, जो आने वाले दिनों में 1,500 डॉलर हो सकता है। पुतिन ने विकसित देशों के समूह जी-7 की आलोचना करते हुए कहा कि भविष्य ब्रिक्स का है, जीडीपी, आबादी और बाजार के लिहाज से। अगले साल ब्रिक्स की अध्यक्षता करने वाले चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने स्पष्ट रेखा खींचने का काम किया और कहा कि युद्ध बेकार की चीज है, इससे आम नागरिक का भला नहीं होता।

सांस लेने के तरीके को नजरअंदाज करना

योग में सांस पर ध्यान देना अभ्यास का महत्वपूर्ण हिस्सा है। लेकिन कई लोग कठिन मुद्रा में पहुंचते ही अनजाने में सांस रोक लेते हैं। सांस को अनावश्यक रूप से रोकना या बहुत तेजी से सांस लेना अभ्यास को असहज बना सकता है।

गलत पोस्चर में आसन करना

किसी योगासन का नाम जान लेना और उसे सही तरीके से करना दो अलग बातें हैं। हाथ, पैर, गर्दन, रीढ़ या कूल्हों की स्थिति थोड़ी भी गलत होने पर आसन का तरीका बदल सकता है। सोशल मीडिया वीडियो देखकर बिना तकनीक समझे आसन कॉपी करना इसलिए उचित नहीं है। इसलिए शुरुआत में प्रशिक्षित योग शिक्षक से बेसिक पोस्चर सीखें। जरूरत पड़ने पर योग ब्लॉक, स्ट्रैप या अन्य उपयुक्त सहायता का इस्तेमाल प्रशिक्षक की सलाह से किया जा सकता है।

योग करते समय न करें ये गलतियां

बिना वार्म-अप के न करें आसन

कई लोग योग मैट बिछाते ही सीधे कठिन आसनों या स्ट्रेचिंग से शुरुआत कर देते हैं। यह आदत सही नहीं मानी जाती। शरीर को अभ्यास के लिए तैयार करने के लिए शुरुआत में कुछ हल्की गतिविधियां और आसान मूवमेंट किए जा सकते हैं। कुछ मिनट हल्का वार्म-अप करने से शरीर धीरे-धीरे गतिविधि के लिए तैयार होता है। इसके बाद आसान आसनों से शुरुआत करके धीरे-धीरे अभ्यास की तीव्रता बढ़ाई जा सकती है। जैसे गर्दन, कंधे, हाथ-पैर और शरीर के दूसरे हिस्सों को हल्के मूवमेंट से तैयार करें और फिर आसनों की ओर बढ़ें।

शरीर को जरूरत से ज्यादा खींचना

योग में लचीलापन महत्वपूर्ण हो सकता है, लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि हर आसन में शरीर को अधिकतम सीमा तक खींचना जरूरी है। कई शुरुआती लोग दूसरों को देखकर खुद को उसी मुद्रा में लाने की कोशिश करते हैं। इससे शरीर पर अनावश्यक दबाव पड़ सकता है। योग में जितना ज्यादा स्ट्रेच, उतना ज्यादा फायदा वाला नियम लागू नहीं होता। इसलिए जहां तक शरीर सहजता से जा रहा है, वहीं तक आसन करें। धीरे-धीरे अभ्यास के साथ अपनी क्षमता विकसित करें।

दर्द होने के बावजूद योग करना

योग करते समय हल्का खिंचाव और असहनीय दर्द एक जैसी चीजें नहीं हैं। अगर किसी आसन के दौरान तेज दर्द, चक्कर, सांस लेने में परेशानी या अचानक असहजता महसूस हो तो उसे नजरअंदाज करके अभ्यास जारी नहीं रखना चाहिए। बल्कि तुरंत आसन से बाहर आएं और आराम करें। बार-बार समस्या होने पर योग्य स्वास्थ्य विशेषज्ञ या प्रशिक्षित योग शिक्षक से सलाह लें। खासकर चोट, सर्जरी, गर्भावस्था या किसी पुरानी स्वास्थ्य समस्या की स्थिति में योग अभ्यास शुरू करने से पहले चिकित्सकीय सलाह लेना उचित है।

योग को सिर्फ तेज एक्सरसाइज समझना

कुछ लोग योग करते समय हर मूवमेंट को बहुत तेजी से करने लगते हैं। लेकिन कई योग अभ्यासों में शरीर की जागरूकता, नियंत्रित मूवमेंट और सांस पर ध्यान महत्वपूर्ण होता है। हर योग शैली की अपनी तकनीक और गति होती है। इसलिए केवल तेजी से आसन बदलना योग का उद्देश्य नहीं है। इसलिए जिस योग शैली का अभ्यास कर रहे हैं, उसकी तकनीक और गति को समझें।

आजकल फिट और एक्टिव रहने के लिए बड़ी संख्या में लोग योग को अपनी दिनचर्या का हिस्सा बना रहे हैं। कोई तनाव कम करने के लिए योग करता है तो कोई शरीर को लचीला बनाए रखने, बेहतर पोस्चर और सामान्य फिटनेस के लिए। लेकिन सिर्फ योगासन करना ही काफी नहीं है, उसे सही तरीके और अपनी क्षमता के अनुसार करना भी उतना ही जरूरी है। कई बार लोग जल्दी रिजल्ट पाने के चक्कर में शरीर को जरूरत से ज्यादा खींचते हैं, वार्म-अप को नजरअंदाज कर देते हैं या बिना सही तकनीक समझे कठिन आसन करने लगते हैं। कुछ लोग सांस रोककर आसन करते रहते हैं, जबकि कुछ दर्द होने के बावजूद अभ्यास जारी रखते हैं। ऐसी गलतियां खासतौर पर योग की शुरुआत करने वाले लोगों के लिए परेशानी का कारण बन सकती हैं। योग को आमतौर पर धीमी, नियंत्रित और जागरूक गतिविधि के रूप में किया जाता है। इसमें शरीर की क्षमता, सांस और मुद्रा के बीच तालमेल महत्वपूर्ण होता है। इसलिए किसी भी आसन को देखकर तुरंत कॉपी करने के बजाय उसकी सही तकनीक सीखना और अपनी शारीरिक स्थिति को ध्यान में रखना बेहतर है।

रिकवरी को नजरअंदाज करना

रोज योग करना अच्छी आदत हो सकती है, लेकिन शरीर को आराम की जरूरत को नजरअंदाज नहीं करना चाहिए। अगर लगातार थकान, दर्द या कमजोरी महसूस हो रही है तो आराम करना जरूरी हो सकता है। योग सत्र के अंत में कुछ समय शांत होकर आराम करना भी अभ्यास का हिस्सा बनाया जा सकता है।

हंसना मना है

पत्रकार- 80 साल की उम्र में भी आप बीवी को डार्लिंग कहते हैं, इस प्यार का राज क्या है? बूढ़ा व्यक्ति- बेटे 20 साल पहले इनका नाम भूल गया था, पूछने की हिम्मत नहीं हुई, इसलिए डार्लिंग कहता हूं...

सोनू अपने दोस्त मिंटू को ज्ञान बांट रहा था, अगर परीक्षा में पेपर बहुत कठिन हो तो आंखें बंद करो, गहरी सांस लो और जोर से कहो- ये सब्जेक्ट बहुत मजेदार है इसलिए अगले साल फिर पढ़ेंगे।

एक बुढ़िया अम्मा को एक भिखारी मंदिर के बाहर मिला...भिखारी - भगवान के नाम पर कुछ दे दो मां जी, चार दिन से कुछ नहीं खाया। बुढ़िया 500 का नोट निकालते हुए बोली - 400 खुले हैं? भिखारी - हां हैं मां जी, बुढ़िया - तो उससे कुछ लेकर खा लेना...

अगर बीवी अपनी साड़ी का पल्लू अपनी कमर में ठूस ले तो समझ जाओ की, या तो वो घर का काम निपटाएगी, या फिर आपको!

टीचर- बेटा अगर सच्चे दिल से प्रार्थना की जाए तो वो सफल जरूर होती है। छात्र- रहने दीजिए सर, अगर ऐसा होता तो आज आप मेरे सर नहीं, ससुर होते...

कहानी | लड़ती बकरियां और सियार

बहुत समय पहले की बात है। एक जंगल में किसी बात को लेकर दो बकरियों के बीच झगड़ा हो गया। इस झगड़े को वहां से गुजर रहा एक साधु देख रहा था। देखते ही देखते दो बकरियों में झगड़ा इतना बड़ गया कि दोनों आपस में लड़ने लगीं। उसी समय वहां से एक सियार भी गुजरा। वह बहुत भूखा था। जब उसने दोनों बकरियों को झगड़ते देखा, तो उसके मुंह में पानी आ गया। बकरियों की लड़ाई इतनी बड़ गई थी कि दोनों ने एक-दूसरे को लहूलुहान कर दिया था, लेकिन फिर भी लड़ना नहीं छोड़ रही थीं। दोनों बकरियों के शरीर खून निकलने लगा था। भूखे सियार ने जब जमीन पर फैले खून की तरफ देखा, तो उसे चाटने लगा और धीरे-धीरे उनके करीब जाने लगा। उसकी भूख और ज्यादा बढ़ गई थी। उसके मन में आया कि क्यों न दोनों बकरियों को मारकर अपनी भूख मिटाई जाए। वहीं, दूर खड़ा साधु यह सब देख रहा था। जब उसने सियार को दोनों बकरियों के बीच जाते हुए देखा, तो सोचा कि अगर सियार इन दोनों बकरियों के और करीब गया, तो उसे चोट लग सकती है। यहां तक कि उसकी जान भी जा सकती है। साधु अभी यह सोच ही रहा था कि सियार दोनों बकरियों के बीच पहुंच गया। बकरियों ने जैसे ही उसे अपने पास आते देखा, तो दोनों ने लड़ना छोड़कर उस पर हमला कर दिया। अचानक हुए हमले से सियार अपने आप को संभाल नहीं सका और चोटिल हो गया। वह किसी तरह से अपनी जान बचाकर वहां से भागा। सियार को भागता देख बकरियां ने भी लड़ना छोड़ दिया और अपने घर लौट गईं। वहीं, साधु भी अपने घर की ओर चल दिया।

कहानी से सीख: हमें इस कहानी से यह सीख मिलती है कि कभी भी लालच नहीं करना चाहिए। साथ ही दूसरों की लड़ाई में नहीं कूदना चाहिए, इससे हमारा ही नुकसान होता है।

7 अंतर खोजें

जानिए कैसा रहेगा कल का दिन

पंडित संदीप आत्रेय शास्त्री

लेखक प्रसिद्ध ज्योतिषविद हैं। सभी प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिए कॉल करें-9837081951

मेष

दिनभर अष्टम भाव का प्रभाव रहने से काम में थोड़ी रुकावटें आ सकती हैं, लेकिन रात के बाद भाग्य का साथ मिलेगा। व्यापार में दिन के समय जोखिम लेने से बचें।

वृषभ

दिनभर व्यापार और जीवनसाथी के साथ तालमेल बहुत अच्छा रहेगा। रात के बाद थोड़ा संभलकर चलें। साझेदारी के कामों में दिन के समय बड़ा मुनाफा हो सकता है।

मिथुन

दिनभर विरोधियों पर आपकी बढ़त बनी रहेगी। रात के बाद व्यापार और दांपत्य जीवन में चमक आएगी। ऑफिस में रुके हुए काम पूरे होंगे। दिनभर ऊर्जा बनी रहेगी।

कर्क

दिनभर बौद्धिक क्षमता से काम बनेंगे। विरोधियों पर सतर्कता जरूरी होगी। शेयर या ट्रेडिंग से जुड़े लोगों लाभ होगा। लव लाइफ में दिनभर मिठास रहेगी।

सिंह

दिनभर घरेलू सुख-सुविधाओं पर ध्यान रहेगा। निर्णय क्षमता और बौद्धिक लाभ बढ़ेगा। प्रॉपर्टी के सौदे फाइनल हो सकते हैं। लव पार्टनर से सुखद समाचार मिल सकता है।

कन्या

दिनभर पराक्रम और नेटवर्किंग से काम बनेंगे। रात के बाद ध्यान परिवार पर रहेगा। व्यापारिक यात्राएं सफल होंगी। लव पार्टनर के साथ यात्रा या आउटिंग का प्लान बन सकता है।

तुला

दिनभर धन लाभ और वाणी से प्रभाव बढ़ेगा। पराक्रम और नेटवर्किंग में तेजी आएगी। व्यापार में मुनाफा बढ़ेगा। लव लाइफ में मधुरता बनी रहेगी।

वृश्चिक

दिनभर आपकी ही राशि में चंद्रमा रहने से प्रभाव बढ़ेगा। धन लाभ के योग बनेंगे। बिजनेस में नए फैसले फायदेमंद साबित होंगे। लव लाइफ बहुत शानदार रहेगी।

धनु

दिनभर खर्च और भागदौड़ रह सकती है। चंद्रमा आपकी ही राशि में आकर नया आत्मविश्वास देगा। उधारी से बचें, नए प्रोजेक्ट्स मिलेंगे। लव लाइफ में गलतफहमियां दूर होंगी।

मकर

दिनभर जबरदस्त लाभ और नेटवर्किंग का माहौल रहेगा। रात के बाद खर्चों पर नियंत्रण रखें। व्यापार में बड़ा आर्थिक लाभ होने के योग हैं। धन आवक बहुत अच्छी रहेगी।

कुम्भ

दिनभर कार्यक्षेत्र में मान-सम्मान बढ़ेगा। बड़े आर्थिक लाभ के रास्ते खुलेंगे। नौकरी और बिजनेस दोनों में तरक्की के योग हैं। लव पार्टनर के साथ यादगार समय बीतेगा।

मीन

दिनभर भाग्य का साथ मिलेगा। कार्यक्षेत्र में पद-प्रतिष्ठा बढ़ेगी। व्यापारिक विस्तार के लिए दिन उत्तम है। लव लाइफ में भावनात्मक निकटता बढ़ेगी।

रामायण पर फिर रामानंद सागर के पोते शिव सागर ने उठाए सवाल

रणबीर कपूर राम नहीं, कृष्ण के लिए ज्यादा उपयुक्त हैं

रणबीर कपूर की फिल्म रामायण लगातार सुर्खियों में चल रही है हाल ही में इसका पहला गाना जय जय राम आया था, जिसने लोगों के बीच तगड़ा बज बनाया गाने में राम-सीता की भूमिका में रणबीर और साई पल्लवी खूब चमके लोगों के मन में कास्टिंग और विजुअल्स को लेकर जो सवाल थे, वो भी मेकर्स ने कम करने की कोशिश की हालांकि अभी भी कुछ लोग ऐसे हैं जो रामायण से पूरी तरह सहमत नहीं हैं। रणबीर कपूर को भगवान राम की भूमिका में देखना अभी भी कई लोग स्वीकार नहीं कर रहे हैं इनमें से एक टीवी का सबसे आइकॉनिक धारावाहिक रामायण बनाने वाले रामानंद सागर के पोते शिव सागर भी हैं उन्होंने शुरू से रणबीर की कास्टिंग पर सवाल उठाए हैं इसके पीछे की वजह एक्टर के निभाए पुराने किरदार रहे हैं अब शिव सागर का कहना है कि रणबीर की पर्सनैलिटी उन्हें भगवान राम से ज्यादा भगवान कृष्ण के किरदार के लिए सही लगती है उन्होंने साफ किया कि उन्हें रणबीर से कोई व्यक्तिगत परेशानी नहीं है।

वैराइटी इंडिया को दिए इंटरव्यू में रामानंद सागर के पोते ने भगवान राम की भूमिका पर अपनी राय देते हुए कहा-मेरे लिए भगवान राम मर्यादा पुरुषोत्तम हैं यानी सद्गुण, गरिमा, संयम और आदर्श आचरण की मिसाल भगवान राम को लेकर मेरी समझ भगवान कृष्ण से काफी अलग है कृष्ण चंचल, शरारती और अपनी लीलाओं से भरे हुए हैं, जबकि राम के व्यक्तित्व में एक गंभीरता, अनुशासन और शांति दिखाई देती है। ये सिर्फ उस किरदार को लेकर मेरी निजी समझ है मुझे लगता है कि रणबीर में एक एक्टर के तौर पर ऐसी खूबियां हैं, जो उन्हें भगवान कृष्ण जैसे किरदार के लिए बहुत अच्छा बना सकती हैं लेकिन जब मैं भगवान राम की कल्पना करता हूं, तो मेरे मन में एक ऐसा व्यक्ति आता है जो ज्यादा संयमी, गंभीर और अंदर से शांत हो ये रणबीर की एक्टिंग पर कोई टिप्पणी नहीं है बात सिर्फ भगवान राम के उस व्यक्तित्व और स्वभाव की है, जिसे मैं अपने मन में उनसे जोड़कर देखता हूं।

इसी बातचीत में रामानंद सागर के पोते ने कपूर खानदान संग अपने पुराने रिश्तों पर भी बात की उन्होंने बताया कि रणबीर के परदादा पृथ्वीराज कपूर ने उनके दादा को इंडस्ट्री में बतौर राइटर ब्रेक दिलाया था उनकी बहन रणबीर-आलिया का घर सजा चुकी हैं इसलिए उनका कपूर खानदान संग एक खास कनेक्शन भी है।

शेखर कपूर संग शादी करने पर मेरे परिवार को ऐतराज था : सुचिता

सुचित्रा कृष्णमूर्ति अपनी पर्सनल लाइफ को लेकर काफी चर्चा में रही हैं। अभिनेत्री ने उम्र में खुद से तीस साल बड़े डायरेक्टर शेखर कपूर से शादी की थी, हालांकि उनका परिवार इस रिश्ते से खुश नहीं था। हाल ही में उन्होंने एक इंटरव्यू में शेखर संग शादी करने पर अपने पैरेंट्स के रिएक्शन का खुलासा किया। साथ ही शेखर संग अपनी पहली मुलाकात और फिर लव स्टोरी का भी खुलासा किया। सुचित्रा ने हाल ही में एक इंटरव्यू में शेखर कपूर संग अपने रिश्ते को लेकर बात की। दोनों ने साल 1999 में शादी रचाई थी और साल 2007 में उनका तलाक हो गया था। सुचित्रा ने बताया, मैंने पहली बार उन्हें उस वक्त देखा था जब वो हमारे कॉलेज में बतौर चीफ गेस्ट आए थे। उन्होंने मुझे देखते हुए कुछ कहा था और मैं खुश हो गई थी। यहीं से मैं उनकी फैन बन गई। एक्ट्रेस ने आगे कहा, जब मैं 18 साल की थी उस वक्त मुझे शेखर कपूर से मिलने के लिए गौतम राजाध्यक्ष ने एक फिल्म के सिलसिले में भेजा था। हालांकि वो फिल्म बन नहीं पाई। एक्ट्रेस ने आगे कहा, पहली मुलाकात के बाद अक्सर उनके पास शेखर के फोन आते थे और वो मुझे बाहर भी ले जाया करते थे। लेकिन इस चीज से मेरी बहन गुस्सा हो जाती थी।

जल्द ही सात फेरे लेंगे समय रैना और मेधा शंकर

समय रैना की लव लाइफ को लेकर पिछले कुछ समय से अलग-अलग नामों की चर्चा हो रही है कभी मेधा शंकर के साथ उनकी डेटिंग की चर्चा हुई, तो कभी शेरोन वर्मा के साथ उनके रिश्ते को लेकर अटकलें लगीं अब सोशल मीडिया पर एक पोस्ट वायरल हो रहा है इस पोस्ट में समय रैना और मेधा शंकर की शादी की चर्चा को हवा दे दी है दरअसल, सोशल मीडिया पर एक रेडिट पोस्ट का स्क्रीनशॉट वायरल हो रहा है पोस्ट में दावा करने वाले शख्स ने खुद को समय रैना के परिवार का करीब बताया है उसका कहना है कि समय की मां से उनकी बात हुई है उनकी मां से हुई इसी बातचीत के आधार पर ये दावा किया जा रहा है कि दिसंबर में दोनों की शादी करने की प्लानिंग है। पोस्ट में यह भी कहा गया है कि समय और मेधा फिलहाल छुट्टियां मना रहे हैं और समय जल्द से जल्द मेधा से शादी करना चाहते हैं। हालांकि, ओरिजनल रेडिट पोस्ट अब मौजूद नहीं है इस दावे की कोई आधिकारिक पुष्टि भी नहीं हुई है।

बिन शादी मां बनना चाहती हैं श्रुति हासन

श्रुति हासन ने हाल ही में सोहा अली खान के ऑल अबाउट हर पॉडकास्ट के एक एपिसोड में अपने शरीर, दर्दनाक पीरियड्स और एडॉप्शन के बारे में खुलकर बात की। 40 साल की एक्ट्रेस ने बताया कि उन्हें 14 साल की उम्र से ही ये कहा जाता आ रहा था कि पॉलिसिस्टिक ओवरी सिंड्रोम की वजह से उनके लिए कंसीव करना मुश्किल हो सकता है। वो कहती हैं कि मुझे हमेशा से यही सुनने को मिलता रहा कि PCOS और चाइल्डबर्थ या कंसेप्शन, इसके बारे में भूल ही जाओ। ये मुश्किल होने वाला है। श्रुति ने बताया कि जब वो डॉक्टर से मिलीं, तो उन्होंने बायोलॉजिकल क्लॉक से डराने के बजाय उनके सामने सभी ऑप्शन्स रखे, भले ही वो अभी मां बनने के लिए तैयार नहीं थीं। श्रुति ने खुलासा किया कि उनकी गाइनकोलॉजिस्ट ने उन्हें एग फ्रीज कराने का ऑप्शन दिया, जो कि अपने आप में आसान प्रक्रिया नहीं है। एक्ट्रेस ने कहा कि ये शारीरिक, मानसिक और आर्थिक रूप से थका देने वाला होता है। एक्ट्रेस ने कहा कि डॉक्टर ने कहा कि वो जब भी मां बनने के लिए रेडी हों। मां बन सकती हैं। मां बनने के बहुत सारे ऑप्शन हैं। श्रुति ने कहा कि मैं एडॉप्ट करने के लिए भी तैयार हूं। मैं वास्तव में बस मां बनना चाहती हूं, मैं निश्चित रूप से इसे करना चाहती हैं। एक्ट्रेस ने कहा कि डॉक्टर संग उनकी बातचीत आंख खोल देने वाली थी। एक्ट्रेस ने माना कि वो इससे पहले ये बातचीत करने से डरती थीं, क्योंकि उन्हें लगता था कि डॉक्टर उन्हें बता देंगी कि वो कंसीव नहीं कर पाएंगी।

गानों में क्रेडिट न मिलने पर अमाल मलिक का छलका दर्द

सिंगर और म्यूजिक डायरेक्टर अमाल मलिक मैं तेरा हीरो गाने में क्रेडिट ना मिलने को लेकर विवादों में हैं। वो लगातार क्रेडिट ना मिलने की वजह से इसके लिए पोस्ट शेयर कर रहे हैं और इसके खिलाफ अपनी आवाज उठा रहे हैं। ऐसे में अब उन्होंने एक बार फिर से पोस्ट साझा की है, जिसमें सिंगर ने क्रेडिट ना मिलने का दर्द बयां किया है और कहा कि वो इस पर चुप नहीं रहने वाले हैं। अमाल मलिक ने एक्स पर लंबी चौड़ी पोस्ट शेयर की है। इसमें उन्होंने लिखा, ये कॉन्ट्रोवर्सी है। ये क्रेडिट, लेखक होने का अधिकार और जवाबदेही का मामला है और मैं इन सिद्धांतों को नजरअंदाज नहीं होने दूंगा। सिंगर ने उन लोगों को भी जवाब दिया, जो लोग सवाल उठाते हैं कि वो बार-बार विवादो में क्यों आ जाते हैं? अमाल ने लिखा, जो लोग ये सवाल उठाते हैं कि मैं बार-बार विवादों में क्यों आ जाता हूं। अपनी पहचान बनाने के लिए मुझे विवादों की जरूरत नहीं है।

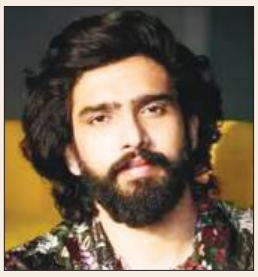

दिल्ली में नाबालिग से रेप-हत्या के बाद सियासी बवाल

कांग्रेस ने भाजपा सरकार को घेरा

» राहुल व प्रियंका गांधी ने महिला सुरक्षा पर उठाए तीखे सवाल

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। दिल्ली में नाबालिग लड़की से दुष्कर्म और हत्या की घटना को लेकर सियासी घमासान मच गया है। विपक्ष ने भाजपा सरकार पर तीखा हमला बोला है। कांग्रेस नेता प्रियंका गांधी ने महिला सुरक्षा का मुद्दा उठाया है। उन्होंने एक्स पर पोस्ट कर केंद्र सरकार और व्यवस्था पर सवाल खड़े किए। प्रियंका गांधी ने कहा कि महिलाओं के खिलाफ हिंसा की घटनाओं पर ठोस कार्रवाई जरूरी है। प्रियंका गांधी ने अपनी पोस्ट में कहा कि दिल्ली में 17 साल की बच्ची के साथ क्रूरता की सारी हदें पार कर दी गईं और बाद में उसकी हत्या कर दी गई।

उन्होंने हाल में एक अन्य नाबालिग लड़की के साथ दुष्कर्म का भी जिक्र किया। उन्होंने आरोप लगाया कि देश में महिला सुरक्षा को लेकर जिम्मेदारी लेने वाला कोई नहीं है। उनके मुताबिक, महिलाओं के विकास की बातें तो होती हैं, लेकिन जमीन पर सुरक्षा से जुड़े सवाल बने हुए हैं। दिल्ली में एक 17 साल की बच्ची के साथ क्रूरता की सारी हदें पार कर दी गईं और उसके बाद उसे बर्बरता से मार डाला गया। कुछ ही दिनों पहले एक और नाबालिग लड़की का बलात्कार किया गया। देश में महिला सुरक्षा के लिए कोई जिम्मेदारी लेने को तैयार ही नहीं है - महिलाओं के विकास की सिर्फ़ खोखली बातें की जाती हैं। सैकड़ों महिलाओं पर अत्याचार होते हैं, हिंसा होती है मगर अपराधियों पर ठोस कार्रवाई की वे उम्मीद नहीं कर सकतीं - एफआईआर दर्ज तक नहीं होते। समाज और सरकार दोनों, महिलाओं को सुरक्षा, स्वतंत्रता और समानता का अधिकार देने में पूरी तरह से विफल हैं।

एफआईआर तक दर्ज नहीं होती : प्रियंका गांधी

कांग्रेस नेता ने अपनी पोस्ट में दावा किया कि महिलाओं के खिलाफ बड़ी संख्या में अत्याचार और हिंसा होती है, लेकिन पीड़िताएं अपराधियों के खिलाफ प्रभावी कार्रवाई की उम्मीद नहीं कर सकतीं। उन्होंने एफआईआरदर्ज होने को लेकर भी सवाल उठाया। प्रियंका गांधी ने कहा कि महिलाओं को सुरक्षा, स्वतंत्रता और समानता देने के मामले में समाज और सरकार दोनों की भूमिका पर गंभीर सवाल खड़े होते हैं।

राहुल ने शाह से पूछा- दिल्ली में महिला सुरक्षा की जिम्मेदारी किसकी?

दिल्ली में गैंगरेप के बाद नाबालिग बच्ची की हत्या मामले को लेकर कांग्रेस सांसद राहुल गांधी ने केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह और दिल्ली पुलिस पर निशाना साधा है। राहुल गांधी ने कहा कि दिल्ली में 17 साल की युवती के साथ गैंगरेप हुआ, उसकी हत्या कर शव खुले मैदान में फेंक दिया गया। राजधानी में इतनी बड़ी दरिंदगी और पुलिस को कई दिनों तक भनक नहीं लगती। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर राहुल गांधी ने लिखा, दिल्ली में 17 साल की युवती के साथ गैंगरेप हुआ, उसकी हत्या कर शव खुले मैदान में फेंक दिया गया। राजधानी में इतनी बड़ी दरिंदगी और पुलिस को कई दिनों तक भनक नहीं लगती। दुर्भाग्य है कि दिल्ली आज राजधानी नहीं, महिलाओं के लिए हर दिन की खौफनाक कहानी बनकर रह गई है। राहुल गांधी ने अमित शाह पर भी निशाना साधा। उन्होंने कहा, अमित शाह, दिल्ली पुलिस आपके अधीन है। महिला सुरक्षा की जिम्मेदारी आखिर किसकी है? या दिल्ली पुलिस का काम सिर्फ आम नागरिकों को डराना-धमकाना रह गया है? क्योंकि अपराधी तो बेखौफ घूम रहे हैं। कांग्रेस नेता ने कहा, दरिंदों की तत्काल गिरफ्तारी हो, कड़ी कार्रवाई और सज़ा मिले, और इस आपराधिक गैर-जिम्मेदारी की जवाबदेही तय हो। महिलाओं की सुरक्षा के बिना भारत आगे नहीं बढ़ सकता।

नीतीश कुमार ने खुद छोड़ा सीएम पद : सम्राट चौधरी

» बोले- उनपर भाजपा का कोई दबाव नहीं था?

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

पटना। नीतीश कुमार ने क्या बिहार के चीफ मिनिस्टर का पद भाजपा के दबाव में छोड़ा था? इस सवाल का जवाब बिहार में उनकी जगह लेने वाले सम्राट चौधरी ने खुद दिया है। उनका कहना है कि नीतीश कुमार ने अपनी इच्छा से सीएम पद से इस्तीफा दिया था। उन्हें ऐसा करने के लिए कहा नहीं गया था और न ही उन पर ऐसा कोई दबाव था। उन्होंने पटना में एक मीडिया इवेंट में यह भी कहा कि नीतीश कुमार भले ही अब राज्यसभा सांसद हैं, लेकिन अब भी वह बिहार एनडीए के नेता हैं और इस बात को लेकर किसी तरह का विवाद नहीं है। सम्राट चौधरी ने कहा, नीतीश कुमार ने अपनी शर्तों से सीएम का पद छोड़ा था।

हमने उन्हें ऐसा करने के लिए नहीं कहा था। यही नहीं वह यह भी मानते थे कि अटल बिहारी वाजपेयी ने ही उन्हें पहली बार सीएम बनने का मौका दिया था, जबकि भाजपा के विधायकों की संख्या उनसे अधिक थी। अब उसी तरह का भाव नीतीश कुमार ने जताया है। सम्राट चौधरी ने कहा कि वर्ष 2000 में जब पहली बार नीतीश कुमार सीएम बने थे तो किसी को बहुमत नहीं मिला था। तब भाजपा ने समर्थन दिया और नीतीश कुमार सीएम बने थे। तब उनकी समता पार्टी होती थी, लेकिन बहुमत साबित न हो पाने के चलते यह सरकार एक सप्ताह तक ही चल सकी। उन्होंने कहा कि भाजपा ने नीतीश कुमार का हमेशा समर्थन किया है और वह भी हमेशा साथ रहे। उन्होंने कहा कि नीतीश कुमार का आशीर्वाद तो लालू यादव की आरजेडी को भी मिला था। उन्होंने कहा कि लालू यादव यदि बिहार का सीएम बने तो इसके लिए भी उन्हें भाजपा का आभारी होना चाहिए। उन्होंने कहा कि तब दलित नेता राम सुंदर दास काफी मजबूत थे और उनकी जगह पर लालू यादव नेता बने थे। बता दें कि 1990 में लालू प्रसाद यादव जनता दल में थे।

भारतीय महिला टीम एशियन गेम्स के सेमीफाइनल में

» शेफाली-श्री चरणी का धमाका, जापान को आठ विकेट से हराया

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

निशिन। भारतीय महिला क्रिकेट टीम एशियन गेम्स के सेमीफाइनल में पहुंच गई है। जापान के निशिन के कोरोगी स्पोर्ट्स पार्क में खेले गए क्वार्टर फाइनल मुकाबले में टीम इंडिया ने जापान को आठ विकेट से हरा दिया। 58 रन के लक्ष्य को भारत ने पांच ओवर में हासिल कर लिया। शेफाली वर्मा ने विनिंग सिक्स लगाया। वह 15 गेंद में छह चौके और दो छक्कों की मदद से 40 रन बनाकर नाबाद रहीं। वहीं, ऋचा घोष छह गेंद में दो चौके की मदद से 12 रन बनाकर नाबाद रहीं। भारतीय कप्तान हरमनप्रीत कौर ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी का फैसला किया था। जापान की टीम 19.5 ओवर में 57 रन पर सिमट गई थी। टीम को पहला झटका सातवें ओवर में लगा था। इसके बाद जापान की पारी ताश के पत्तों की तरह बिखर गई।

हारुना इवासाकी 10 रन, अयाका कातो स्टैफर्ड 47 गेंद में 25 रन बनाकर आउट हुईं। ये दोनों ओपनर्स ने ही टीम के लिए सबसे ज्यादा रन बनाए। भारत के लिए श्री चरणी ने चार विकेट झटके, वहीं शेफाली वर्मा को दो विकेट मिले। श्रेयांका पाटिल और दीप्ति शर्मा को एक-एक विकेट मिला। भारतीय टीम ने इस मैच में प्रयोग किया था हालांकि, यह फैसला कामयाब साबित नहीं हुआ। शेफाली के साथ ओपनिंग उतरीं गुणालन कमालिनी खाता नहीं खोल सकीं, जबकि तीसरे नंबर पर उतरीं भारती फुलमाली छह रन बनाकर आउट हुईं। जापान की ओर से नोनोहा यासूमोतो और अयाका स्टैफोर्ड ने एक-एक विकेट लिया। वहीं, श्रीलंका ने मलयेशिया को 86 रन से हराकर सेमीफाइनल में जगह बनाई थी। वहीं, पाकिस्तान ने क्वार्टर फाइनल में थाइलैंड को हराकर सेमीफाइनल में जगह बनाई है।

सेमीफाइनल में बांग्लादेश से होगा मुकाबला

इसके अलावा बांग्लादेश ने भी सेमीफाइनल में जगह बना ली है। उसका और चीन का सेमीफाइनल मुकाबला बारिश के कारण रद्द हो गया था। बेहतर सीडिंग की वजह से बांग्लादेश सेमीफाइनल में पहुंच गया। सेमीफाइनल में उसका सामना 20 सितंबर को भारत और जापान के बीच जीत दर्ज करने वाली टीम से होगा। जबकि दूसरे सेमीफाइनल में उसी दिन पाकिस्तान और श्रीलंका की टीमें आमने-सामने होंगी।

केंद्र सरकार के साथ आर-पार के मूड में हेमंत सोरेन

» झारखंड में फिर गूंजेगा जल-जंगल-जमीन का मुद्दा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

रांची। खनिज पर सेस वसूली के राज्य के अधिकार को खत्म करनेवाले खान और खनिज (विकास और विनियमन) संशोधन अधिनियम, 26 पर हेमंत सोरेन की अगुवाई वाली झारखंड सरकार कड़ी आपत्ति जता रही है।सत्तारूढ़ दल झामुमो ने भी सड़क पर उतरने की घोषणा कर दी है। इसके तहत शनिवार को राज्य के सभी प्रखंड मुख्यालयों में धरना प्रदर्शन होगा।बीते मानसून सत्र में संसद से तत्संबंधी विधेयक को मंजूरी मिलने के बाद से हेमंत सोरेन के नेतृत्व में झामुमो ने इसे झारखंडी जनता के हितों पर कुठाराघात करार दिया है।

गांव स्तर पर झामुमो कार्यकर्ता फिर जल, जंगल और जमीन के अधिकार की बात उठा रहे हैं। पहले सात सितंबर को पूरे राज्य में आंदोलन की घोषणा की गई थी। नगर विकास सह उच्च शिक्षा मंत्री सुदिव्य सोनू के अकस्मात निधन के कारण आंदोलन की तिथि बढ़ा दी गई। झामुमो सांसद और विधायकों के नेतृत्व में जोरदार आंदोलन की तैयारी है।

सूखा प्रभावित किसानों को 50 हजार प्रति हेक्टेयर दे सरकार : पवार

» शरद पवार ने की मुख्यमंत्री से अपील

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

मुंबई। राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (शरदचंद्र पवार) के अध्यक्ष शरद पवार ने महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस से अपील की कि वह कम बारिश का सामना करने वाले तालुकों में सूखा घोषित करें और प्रभावित किसानों को कम से कम 50,000 रुपये प्रति हेक्टेयर की दर से आर्थिक सहायता दें। पवार ने मुख्यमंत्री को लिखे एक पत्र में दावा किया कि राज्य के 36 में से 31 जिलों में कम बारिश के कारण सोयाबीन, कपास और दाल जैसी खड़ी फसलें बर्बाद हो गई हैं, साथ ही बुआई का रकबा भी काफी कम हो गया है और पेयजल व चारे की भारी किल्लत पैदा हो गई है।

उन्होंने सरकार से मांग की कि वह औपचारिकताओं की प्रतीक्षा किये बिना सूखा घोषित करे और प्रभावित इलाकों को तुरंत राहत पहुंचाए। पूर्व केंद्रीय कृषि मंत्री ने किसानों को प्रति हेक्टेयर 50,000 रुपये और खेतिहर मज़दूर परिवारों को 25,000 रुपये प्रति परिवार की दर से विशेष सहायता देने की भी मांग की। उन्होंने कृषि ऋण माफी योजना को तुरंत लागू करने और नयी फसल के लिए ऋण उपलब्ध कराने की भी मांग की। पवार ने पत्र में उन किसानों के लिए प्रोत्साहन राशि 50,000 रुपये से बढ़ाकर एक लाख रुपये करने की मांग की जो नियमित रूप से कर्ज चुकाते हैं।

पवार किसानों की समस्या को लेकर राजनीति कर रहे: बावनकुले

इस बीच, महाराष्ट्र के राजस्व मंत्री चंद्रशेखर बावनकुले ने पवार पर किसानों की समस्या को लेकर राजनीति करने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि फडणवीस ने कम बारिश वाले जिलों में फसल के नुकसान का आकलन करने के लिए पहले ही 'पंचनामा' करने का आदेश दे दिया है। बावनकुले ने कहा कि सभी जिलाधिकारियों, प्रभारी मंत्रियों और विधायकों को क्षेत्र में जाकर स्थिति का जायजा लेना चाहिए। उन्होंने कहा कि सरकार ने 2017 में एक सरकारी आदेश और 2018 में एक अन्य सरकारी आदेश जारी किया था, इसलिए हमें यह तय करना होगा कि इनमें से किसका पालन किया जाए और किस राहत योजना का इस्तेमाल किया जाए तथा इसके लिए एक छोटा सा सर्वेक्षण आवश्यक है। बावनकुले ने कहा, अगर सर्वेक्षण ठीक से किया जाए, तो योग्य किसानों को न्याय मिलेगा। अगर हम सही तरीके से सर्वेक्षण नहीं करते और जरूरी कदम नहीं उठाते, तो इसका कोई लाभ नहीं होगा।

छात्रों की गूंज से भाजपा का हाल बेहाल

» पवन खेड़ा का केंद्र पर तीखा हमला

» बोले- छात्रों की गूंज से उड़ी बीजेपी की नींद, कार्यक्रम रोकने की हो रही कोशिश

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

उज्जैन। इंदौर में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी के प्रस्तावित 'छात्रों की गूंज' को लेकर सियासी बवाल मचा हुआ है। कांग्रेस ने भाजपा पर उसे रू कवाने के लिए साजिश करने का आरोप लगाया है। उज्जैन पहुंचे कांग्रेस नेता पवन खेड़ा ने बाबा महाकाल के दर्शन के बाद 'छात्रों की गूंज' अभियान को लेकर केंद्र सरकार पर निशाना साधा। उन्होंने दावा किया कि राहुल गांधी के अभियान से प्रधानमंत्री मोदी और प्रशासन दबाव में हैं।

धार्मिक नगरी उज्जैन पहुंचे कांग्रेस के राष्ट्रीय प्रवक्ता और राज्यसभा सांसद पवन खेड़ा ने बाबा महाकाल के दर्शन-पूजन के बाद भाजपा और केंद्र सरकार पर निशाना साधा। राहुल गांधी के छात्रों की गूंज कार्यक्रम को लेकर खेड़ा ने दावा किया कि इस अभियान से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की नींद उड़ी हुई है और इसी घबराहट के कारण स्थानीय प्रशासन भी दबाव में काम कर रहा है।

बाबा महाकाल की पूजा-अर्चना के बाद मीडिया से बातचीत में पवन खेड़ा ने प्रशासनिक पाबंदियों पर सवाल उठाए। उन्होंने कहा कि राहुल गांधी का छात्रों के बीच जाना और उनसे संवाद करना सरकार के लिए चिंता का विषय बन गया है। खेड़ा ने राजनीतिक दावा करते हुए कहा कि जब देश के प्रधानमंत्री ही राहुल गांधी से डरते हैं, तो प्रशासन का डरना स्वाभाविक ही है। महाकाल दर्शन के दौरान खेड़ा ने कहा कि बाबा के दरबार में उन्हें हमेशा असीम शांति मिलती है। उन्होंने देश और प्रदेश की सुख-समृद्धि तथा सामाजिक सौहार्द की प्रार्थना करने की बात कही।

दीपोत्सव के खर्च पर भी उठे सवाल

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जन्मदिन के मौके पर उज्जैन में आयोजित दीपोत्सव को लेकर भी पवन खेड़ा ने भाजपा सरकार पर सवाल उठाए। उन्होंने कहा कि देश में बिहार की बाढ़ और दिल्ली में मासूमों की मौत जैसे गंभीर मुद्दे हैं। ऐसे में जन्मदिन के नाम पर करोड़ों रुपये खर्च करना संवेदनहीनता है। उज्जैन में दीपोत्सव के दौरान एक 12 वर्षीय बच्चे के झुलसने की घटना का जिक्र करते हुए खेड़ा ने दुख जताते हुए कहा कि कांग्रेस ध्यान भटकाने वाली राजनीति में शामिल नहीं होगी।

राहुल गांधी ने पूछा- क्या खिला रहा है इंदौर, पोहे-जलेबी या कुछ और...

स्वाद की राजधानी कहे जाने वाले इंदौर के पोहे देशभर में मशहूर हैं। इंदौर में होने वाले 'छात्रों की गूंज' आयोजन में इंदौर की खान-पान संस्कृति के जरिए भी युवाओं को साधने की कोशिश राहुल गांधी ने की है। उन्होंने आयोजन के एक दिन पहले अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर एक पोस्ट की। इसमें लिखा, 'क्या खिला रहा है इंदौर, पोहे-जलेबी या कुछ और।' उनकी इस पोस्ट की सोशल मीडिया पर चर्चा है। दरअसल, इंस्टाग्राम को युवा ज्यादा पसंद करते हैं। इस कारण राहुल गांधी ने यह पोस्ट सिर्फ इंस्टाग्राम अकाउंट पर ही की है।

56 दुकान भी जा सकते हैं राहुल

इंदौर की सराफा चौपाटी और 56 दुकान खान-पान के लिए प्रसिद्ध हैं। पांच साल पहले जब राहुल गांधी चुनावी रैली में शामिल होने के लिए इंदौर आए थे, तो 56 दुकान भी गए थे। शनिवार को भी वे 56 दुकान जा सकते हैं। राहुल गांधी की इंदौर यात्रा में 'छात्रों की गूंज' कार्यक्रम के अलावा कोई दूसरा कार्यक्रम नहीं जुड़ा है, लेकिन इंदौर आने के बाद वे कुछ स्थानों पर जा सकते हैं। हालांकि, इसका खुलासा कांग्रेस नेताओं ने नहीं किया है।

भाजपा अध्यक्ष ने किया पलटवार

राहुल गांधी के छात्रों की गूंज अभियान को लेकर उज्जैन में भाजपा और कांग्रेस के बीच बयानबाजी भी तेज है। भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नबीन ने अभियान पर पलटवार करते हुए आरोप लगाया कि इसका इस्तेमाल युवाओं के हित के बजाय कांग्रेस के भीतर उठने वाली विरोधी आवाजों को दबाने के लिए किया जा रहा है।

मप्र में आगर-मालवा में बगलामुखी मंदिर के पास नाले में बही कार

» तीन बच्चों समेत 8 श्रद्धालुओं की मौत

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

भोपाल। मध्य प्रदेश के आगर-मालवा जिले के नलखेड़ा स्थित प्रसिद्ध मां बगलामुखी मंदिर के पास बीती रात मूसलधार बारिश के दौरान दर्दनाक हादसा हो गया। तेज बारिश के बीच पानी के तेज बहाव में एक कार नाले में बह गई। हादसे में कार सवार 3 बच्चों, 3 पुरुषों और 2 महिलाओं सहित कुल 8 लोगों की मौत होने की जानकारी सामने आई है।

बताया जा रहा है कि बीती रात क्षेत्र में तेज बारिश हो रही थी। इसी दौरान श्रद्धालुओं से भरी कार नाले में पानी के तेज बहाव की चपेट में आ गई और बह गई। घटना की सूचना मिलते ही स्थानीय पुलिस और प्रशासन मौके पर पहुंचा। पुलिस ने राहत एवं बचाव कार्य शुरू करते हुए कार और शवों को नाले से बाहर निकालने की कार्रवाई की। फिलहाल पुलिस घटना की परिस्थितियों और हादसे के कारणों की जांच में जुटी है। घटना की सूचना मिलते ही स्थानीय प्रशासन और राहत-बचाव दल तुरंत मौके पर पहुंच गए। तेज बहाव में बही कार और उसमें सवार लोगों की तलाश के लिए युद्धस्तर पर रेस्क्यू ऑपरेशन शुरू किया गया।

ममता बनर्जी को एक और झटका

नंदीग्राम के बाद रेजीनगर से भी उम्मीदवार ने वापस लिया नाम

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

कोलकाता। ममता बनर्जी के लिए इन दिनों राजनीतिक झटकों का दौर जारी है। नंदीग्राम उपचुनाव से उनकी पार्टी के उम्मीदवार के नाम वापस लेने के ठीक एक दिन बाद रेजीनगर उपचुनाव में भी पार्टी के प्रत्याशी ने चुनाव न लड़ने का फैसला किया है। शनिवार को ममता बनर्जी की पार्टी के उम्मीदवार रबीउल आलम चौधरी ने चुनावी मैदान छोड़ दिया।

आपको बता दें कि नंदीग्राम और रेजीनगर दोनों ही सीटों पर उपचुनाव के लिए 6 अक्टूबर को मतदान होना है। इस तरह, ममता बनर्जी ने अब इन दोनों ही महत्वपूर्ण सीटों पर अपने उम्मीदवार खो दिए हैं। पश्चिम बंगाल का नंदीग्राम उपचुनाव देश के सबसे चर्चित और हाई-प्रोफाइल सियासी मुकाबलों में से एक बनता जा रहा था, लेकिन बीते शुक्रवार को महज कुछ ही घंटों के भीतर पूरी राजनीतिक तस्वीर बदल गई।

इस नाटकीय घटनाक्रम की शुरुआत तब हुई, जब ममता बनर्जी गुट की उम्मीदवार संचिता प्रधान डे ने राज्य के मुख्यमंत्री शुभेंदु

अधिकारी से मुलाकात के तुरंत बाद अचानक चुनाव मैदान से अपना नाम वापस ले लिया। इस बड़े उलटफेर के बाद जैसे ही ममता बनर्जी ने विपक्षी एकजुटता दिखाते हुए कांग्रेस उम्मीदवार मिलन प्रधान को अपना समर्थन देने का एलान किया, वैसे ही सियासी पारा और चढ़ गया। समर्थन की घोषणा के कुछ ही घंटों के भीतर पुलिस ने मिलन प्रधान को साल 2007 के नंदीग्राम आंदोलन से जुड़े एक पुराने हत्या के मामले में गिरफ्तार कर लिया। सुर्खियों में आ गई जब टीएमसी के अरूप रॉय गुट डेमोक्रेटिक तृणमूल कांग्रेस के नेता रितब्रत बनर्जी ने दावा किया कि यह कार्रवाई उनके गुट द्वारा दर्ज कराई गई शिकायत के आधार पर हुई है। रितब्रत बनर्जी का यह धड़ा तृणमूल से अलग होकर खुद नंदीग्राम उपचुनाव लड़ रहा है।

दुष्यंत चौटाला का भाजपा पर हमला

» विकास से लेकर नौकरियों और कानून व्यवस्था पर उठाए सवाल

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

चंडीगढ़। जननायक जनता पार्टी (जेजेपी) के वरिष्ठ नेता और पूर्व उपमुख्यमंत्री दुष्यंत चौटाला ने जींद में प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान भाजपा सरकार पर कई मुद्दों को लेकर निशाना साधा। उन्होंने विकास कार्यों, रोजगार, कानून व्यवस्था, यूपीआईसमेत कई विषयों पर सरकार की नीतियों पर सवाल उठाए।

दुष्यंत चौटाला ने आरोप लगाया कि जब सरकार से विकास कार्यों को लेकर सवाल किया जाता है तो चर्चा दूसरे मुद्दों की ओर मोड़ दी जाती है। उन्होंने गांवों में दीये जलाने के कार्यक्रम को लेकर भी सवाल उठाते हुए आरोप लगाया कि सरपंचों पर 50-50 दीये जलाने का दबाव बनाया जा रहा है। यह आरोप दुष्यंत चौटाला की ओर से लगाया गया है।

अभी कितने लोगों को गंवानी पड़ेगी अपनी जान : अभिजीत

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

मुंबई। आईआईटी बॉम्बे में सुसाइड पर सीजेपी फाउंडर अभिजीत दीपके ने रिएक्शन दिया है। उन्होंने एक्स पर पोस्ट कर लिखा कि दूर-दराज के आदिवासी इलाकों में भी छात्र मर रहे हैं और मुंबई जैसे बड़े शहर में भी। यह संकट हर जगह फैला हुआ है। छात्रों की जिंदगी को प्राथमिकता देने से पहले और कितने छात्रों को अपनी जान गंवानी पड़ेगी? आईआईटीबॉम्बे के पवई कैंपस में शुक्र वार को दूसरे साल के एक छात्र की मौत से हड़कंप मच गया। छात्र एनर्जी साइंस एंड इंजीनियरिंग विभाग में बीटेक की पढ़ाई कर रहा था।

संस्थान के मुताबिक, उसी दिन परीक्षा के दौरान उसे मोबाइल फोन इस्तेमाल करते हुए पकड़ा गया था। आईआईटी बॉम्बे ने बताया कि छात्र ने परीक्षा का प्रश्नपत्र चेट जीपीटी पर अपलोड कर उसके जवाब हासिल करने की कोशिश की थी। परीक्षा के

आईआईटी बॉम्बे में सुसाइड पर सीजेपी दुखी

दौरान हुई इस घटना के बाद छात्र की मौत हो गई। हालांकि, आईआईटी बॉम्बे ने साफ कहा है कि उसके खिलाफ कोई औपचारिक अनुशासनात्मक कार्रवाई शुरू नहीं की गई थी संस्थान के अनुसार, विभाग के प्रमुख और परीक्षा से जुड़े शिक्षक ने छात्र से बात की थी और उसे समझाया था कि इस घटना का उसके अकादमिक करियर पर कोई बड़ा असर नहीं पड़ेगा। इसके बाद छात्र अपने हॉस्टल के कमरे में लौट गया, जहां बाद में वह मृत पाया गया।

डूसू के चुनाव में एबीवीपी को बड़ा झटका

» 13वें राउंड में एनएसयूआई अध्यक्ष सह सचिव पद पर आगे, 1 पर एबीवीपी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। दिल्ली यूनिवर्सिटी छात्र संघ (डूसू) चुनाव 26 के लिए दो शिफ्ट में मतदान शुक्रवार (18 सितंबर) को संपन्न हो चुका है. कुल 1,51,842 वोटरों के लिए 158 मतदान बूथ बनाए गए थे. रात 8 बजे तक 40.46प्रतिशत मतदान दर्ज हुआ मतदा। अध्यक्ष पद पर एबीवीपी के

यश डबास को 14,919 वोट मिले हैं, जबकि एनएसयूआई के विजय शंकर मीणा को 15,212 वोट मिले हैं. मीणा 293 वोटों से आगे हैं।

उपाध्यक्ष पद पर निर्दलीय दीपांशु शौकीन 19,964 वोटों के साथ सबसे आगे हैं। एबीवीपी के ईशू मौर्य को 10,127 और एनएसयूआई के वीर चतरथ को 4,692 वोट मिले हैं. दीपांशु शौकीन, ईशू मौर्य से 9,837 वोटों से आगे हैं। सचिव पद पर एबीवीपी की रिया छावड़ी को 12,750 वोट मिले हैं, जबकि एनएसयूआई की नम्रता चौधरी को 9,895 वोट मिले हैं. रिया छावड़ी 2,855 वोटों से आगे हैं। संयुक्त सचिव पद पर ह्स्ड्ढ के गोपाल चौधरी 10,403 वोटों के साथ आगे हैं. विशेष यादव को 9,898 और एबीवीपी के लक्ष्य राज सिंह को 9,728 वोट मिले हैं. गोपाल चौधरी, विशेष यादव से 505 वोटों से आगे हैं।

महाराष्ट्र कार्यालय :- 4पीएम न्यूज़ नेटवर्क, 2-डी सिटी मॉल, अंधेरी वेस्ट, मुंबई, महाराष्ट्र - 400053। विधि सलाहकार : मोहम्मद हैदर
*इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी।
RNI-UPHIN/2015/62233, दूरभाष: 0522- 4078371 | Email: daily4pm@gmail.com | website: www.4pm.co.in |
समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन ही होंगे।

स्वामी 4 पीएम न्यूज नेटवर्क्स प्राइवेट लिमिटेड के लिए
मुद्रक एवं प्रकाशक संजय शर्मा
द्वारा आस्था प्रिंटर्स, 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से मुद्रित
पता 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से प्रकाशित। संपादक- संजय शर्मा